SAPTHAGIRI (HINDI)
ILLUSTRATED MONTHLY
Volume:52, Issue: 10
March-2022, Price Rs.5/-.
No. of pages-56.

तिरुमल तिरुपति देवस्थान

सप्तगिरि

सचित्र मासिक पत्रिका

मार्च-2022

रु.5/-

नागुलापुरम्
श्री वेदनारायणस्वामी जी का प्लवोत्सव
दि. 24-03-2022 से दि. 28-03-2022 तक

ओंटिमिट्टा
श्री कोदंडरामस्वामीजी का ब्रह्मोत्सव
2022 अप्रैल 10 से 18 तक

10-04-2022
रविवार
दिन - ध्वजारोहण
रात - शेषवाहन

11-04-2022
सोमवार
दिन - वेणुगानालंकार
रात - हंसवाहन

12-04-2022
मंगलवार
दिन - वटपत्रशायी अलंकार
रात - सिंहवाहन

13-04-2022
बुधवार
दिन - नवनीतकृष्णालंकार
रात - हनुमत्सेवा

14-04-2022
गुरुवार
दिन - मोहिनीसेवा
रात - गरुडसेवा

15-04-2022
शुक्रवार
दिन - शिवधनुर्भाणालंकार
रात - एदुर्कोलु, कल्याणोत्सव, गजवाहन

16-04-2022
शनिवार
दिन - रथ-यात्रा

17-04-2022
रविवार
दिन - कालीयमर्दनालंकार
रात - अश्ववाहन

18-04-2022
सोमवार
दिन - चक्रस्नान
रात - ध्वजावरोहण

निमित्तानि च पश्यामि विपरीतानि केशव।
न च श्रेयोऽनुपश्यामि हत्वा स्वजनमाहवे ॥

(- श्रीमद्भगवद्गीता १-३१)

हे केशव! मैं कारण को भी विपरीत ही देख रहा हूँ तथा युद्ध में स्वजनों को मारकर कोई कल्याण भी नहीं देखता हूँ।

गीतासु न विशेषोऽस्ति जनेषूच्चावचेषु च।
ज्ञानेष्वेव समग्रेषु समा ब्रह्मस्वरूपिणी।

(- गीता मकरंद, गीता की महिमा)

गीताध्ययन के बारे में छोटे बडे का अंतर कुछ नहीं है। (सभी गीताध्ययन के अधिकारी हैं।) गीता सभी ज्ञानों में समरूपिणी एवं ब्रह्म स्वरूपिणी है।

गतांक से

श्री रामानुज नूट्रन्दादि

मूल - श्रीरंगामृत कवि विरचित

प्रेषक - श्री श्रीराम मालपाणी
मोबाइल - 9403727927

ज्ञानम् कनिन्द नलंकोण्डु, नाडोरुम् नैपर्क्कु
वानम् कोडुप्पदु माधवन्, वल्विनैयेन् मनत्तिल्
ईनम् कडिन्द इरामानुजन् तन्नै येय्दिनर्क्कु अत्
तानम् कोडुप्पदु, तन्तह वेन्नुम् शरण् कोडुत्ते ॥६६॥

माधवस्तावत् ज्ञानविपाकभूतनिरन्तरध्यानात्मकभक्तिप्रकर्षभाजामेव मुक्तप्रदः प्रतीतः; महापापिनो मम हृदि कलुषमपोढवान् भगवान् रामानुजस्तु केवलं स्वकृपयैव मुक्तिमनुगृह्णति॥

साक्षात् लक्ष्मीपति भगवान भी भक्तिरूप से परिणत ज्ञान से नित्य अपनी उपासना करने वालों को ही मोक्ष देते हैं। मुझ महापापी के हृद्गत समस्त कालुष्य मिटानेवाले श्री रामानुज स्वामीजी तो अपने आश्रितों को स्वयं अपनी कृपा रूप साधन देकर उस मोक्ष को प्रदान करते हैं। (विवरण - मोक्षप्रदान भगवान का प्रसिद्ध व मुख्य काम है। परंतु उनसे मोक्ष लेना बहुत कठीन हैं; क्योंकि अपने पास किसी साधन के विना खाली हाथ रहनेवालों को वे मोक्ष नहीं देंगे। वह साधन भी बहुत दुर्लभ है। तथाहि जिसे पहले ज्ञान उत्पन्न हो, और बाद में वह धीरे-धीरे बढ़कर परभक्ति परज्ञान इत्यादि परमभक्ति तक की अवस्थाएँ प्राप्त करें, और उसके फलतया निरंतर भजन भी सिद्ध हो, ऐसे भाग्यवान ही भगवान के श्रीहस्त से मोक्ष पा सकेगा। श्री रामानुजस्वामीजी भी मोक्षप्रदान करते हैं; परंतु वे ऐसे साधन की प्रतीक्षा नहीं करते; किंतु अपने पादाश्रितों को अपनी कृपा ही साधन बनाकर, उनमें और किसी प्रकार की योग्यता के विना ही उन्हें मोक्ष देते हैं। अतः भगवत्सन्निधि जाने की अपेक्षा श्रीस्वामीजी का आश्रयण करना ही मुमुक्षुओं के लिए श्रेयस्कर है।)

श्री रामानुज स्वामीजी अपनी कृपा को ही साधन बनाकर,
योग्यता देखे बिना मोक्ष प्रदान करते हैं।

क्रमशः

सप्तगिरि

तिरुमल तिरुपति देवस्थान की सचित्र मासिक पत्रिका

वेङ्कटाद्रिसमं स्थानं ब्रह्माण्डे नास्ति किञ्चन।
वेङ्कटेश समो देवो न भूतो न भविष्यति।।

वर्ष-५२ मार्च-२०२२ अंक-१०

विषयसूची

श्री रामानुज नूट्रन्दादि	श्री श्रीराम मालपाणी	04
महाशिवरात्रि	डॉ.एम.रजनी	07
तिरुपति श्रीवेङ्कटेश्वर (तिरुपति बालाजी)	प्रो.यद्दनपूडि वेङ्कटरमण राव प्रो.गोपाल शर्मा	11
भरद्वाज ऋषि	डॉ.जी.सुजाता	14
श्री वेंकटाचल की महिमा	आचार्य आई.एन.चंद्रशेखर रेड्डी	17
सती अनसूया	डॉ.के.एम.भवानी	20
मंगलाशासन आल्वार-पाशुरम्	श्री के.रामनाथन	22
धर्म के सही मार्गदर्शन से युवाओं का अद्भुत विकास	श्री ज्योतीन्द्र के. अजवालिया	24
शरणागति मीमांसा	श्री कमलकिशोर हि. तापडिया	31
श्री कपिलेश्वर स्वामी मंदिर, तिरुपति	डॉ.बी.के.माधवी	33
श्री प्रपन्नामृतम्	श्री रघुनाथदास रान्दड	38
हरिदास वाङ्मय में श्रीवेंकटाचलाधीश	डॉ.एम.आर.राजेश्वरी	40
श्रीमद्भगवद्गीता	श्री बी.राजीव रत्न	42
श्रीवैष्णव दिव्यदेश-108	श्रीमती विजया कमलकिशोर तापड़िया	44
सोंठ के फायदे	डॉ.सुमा जोषि	47
आइये, संस्कृत सीखेंगे...!!	डॉ.सी.आदिलक्ष्मी	49
नीतिकथा - श्री महाविष्णु और गरुड के संवाद	श्रीमती के.प्रेमा रामनाथन	50
क्विज	डॉ.एन.दिव्या	51
चित्रकथा - मूक जीवों की मुक्ति	एन.प्रत्यूषा	52

website: www.tirumala.org or www.tirupati.org वेबसैट के द्वारा सप्तगिरि पढ़ने की सुविधा पाठकों को दी जाती है। सूचना, सुझाव, शिकायतों के लिए - sapthagiri.helpdesk@tirumala.org

गौरव संपादक
डॉ.के.एस.जवहर रेड्डी, आई.ए.एस.,
कार्यनिर्वहणाधिकारी, ति.ति.दे.

प्रधान संपादक
डॉ.के.राधारमण

संपादक
डॉ.वी.जी.चोक्कलिंगम

उपसंपादक
श्रीमती एन.मनोरमा

मुद्रक
श्री पी.रामराजु
विशेष अधिकारी,
ति.ति.दे. मुद्रणालय, तिरुपति।

स्थिरचित्र
श्री पी.एन.शेखर, छायाचित्रकार, ति.ति.दे., तिरुपति।
श्री बी.वेंकटरमण, सहायक चित्रकार, ति.ति.दे., तिरुपति।

जीवन चंदा .. रु.500-00
वार्षिक चंदा .. रु.60-00
एक प्रति .. रु.05-00
विदेशी वार्षिक चंदा .. रु.850-00

अन्य विवरण के लिए:
CHIEF EDITOR, SAPTHAGIRI, TIRUPATI - 517 507.
Ph.0877-2264543, 2264359, Editor - 2264360.

मुखचित्र - उभयदेवेरियों सहित श्री वेदनारायणस्वामीजी, नागुलापुरम्।
चौथा कवर पृष्ठ - श्री लक्ष्मीनरसिंहस्वामीजी, तरिगोंडा।

सूचना

मुद्रित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखक के हैं। उनके लिए हम जिम्मेदार नहीं हैं।

- प्रधान संपादक

संपादकीय

जीवनोद्धारक स्त्री मूर्ति

हमारे हैंदव संस्कृति में स्त्री मूर्ति को अधिक प्राधान्य दिया है। जगत को आगे बढ़ाने में नारी की भूमिका बहुत ही महत्वपूर्ण हैं। आदिकाल से भारत में नारी को विशेष स्थान दिया गया हैं। हिन्दू धर्म ग्रंथों में नारी को देवी के रूप में मानकर पूजा जाता था। हमारे साहित्य में नारी का गुण गान किया गया है। माना जाता है कि जहाँ नारी का आदर होता हैं वहाँ देवताओं का वास होता है।

इस तरह से नारी का स्थान सम्माननीय तथा पूजनीय था। नारी के बिना नर का अस्तित्व संभव नहीं हैं। प्राचीन काल से ही भारतीय समाज में नारी को उचित स्थान प्राप्त था। प्राचीन काल में विदुषी महिलाओं में सीता, अनसूया, सावित्री, द्रौपदी आदि महिलाओं का नाम आज भी बहुत ही ज्यादा सम्मान के साथ लिया जाता हैं। प्रत्येक कार्य में नारी की उपस्थिति को आवश्यक स्थान दिया है।

त्रिमूर्तियों ने भी अपने धर्मपत्नियों को उचित स्थान देकर आदर किया है- ''श्री महाविष्णु ने अपना वक्षःस्थल में श्री महालक्ष्मी को; शिव जी अपने अर्ध शरीर भाग में पार्वती माता को स्थान दिया और ब्रह्मदेव ने जीभ पर सरस्वती माता को स्थान देकर स्त्री शक्ति को सम्मान दिया है। प्रकृति में स्त्री शक्ति के बिना कोई काम करना कष्ट दायक है।

'ललिता सहस्रनाम', 'गायत्री मंत्र', 'श्रीसूक्तम्', 'श्रीदेवी खड्ग माला स्तोत्र' और 'कनकधारा स्तोत्र' जैसे अनेक आदि मंत्र माँ का दया, करुणा, कटाक्ष व पराक्रम को सूचित करके हमारे जीवनोद्धारण व विकास के लिए करुणामूर्ति देवी को प्रार्थना करके अरिषड्वर्गों को पार करके जीवन्मुक्ति पाने के लिए देवी माँ रास्ता दिखाती है।

एक व्यक्ति और समाज के विकास में स्त्री का स्थान महत्वपूर्ण हैं। ऐसी उदत्त भाव संपन्न स्त्री शक्ति को लेश मात्र भी अपमान न करके, हम उसका सम्मान करने से वही उस अनंत नारी चेतना शक्ति को समर्पित मंगलकारी बनायेगी। हरेक स्त्री मूर्ति में माँ को दिखाकर पाशविक प्रवृत्ति को हटाने के लिए हर एक मन में धार्मिक व आध्यात्मिक चिंतन रूपी कर्म का अनुसरण करना होगा।

या देवी सर्वभूतेषु शक्ति रूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।

महाशिवरात्रि

- डॉ.एम.रजनी
मोबाइल - 9701261626

अर्धरात्रियुता यत्र माघकृष्णचतुर्दशी।
शिवरात्रिव्रतं तत्र सोश्वमेधफलं लभेत्।।

महाशिवरात्रि माघ मास के बहुलपक्ष में चतुर्दशी तिथि के दिन मनाया जाता है। आधी रात तक चतुर्दशी तिथि का रहना है। धर्म शास्त्र का उपदेश है कि जो लोग इस व्रत का आचरण करते हैं। उन्हें अश्वमेध फल प्राप्त होगा।

महाशिवरात्रि का अर्थ होता है - महालिंग की रात्रि या महेश्वर की रात्रि। 'शिव' के अन्यान्य अर्थ हैं, यथा- ब्रह्मानंद स्वरूपी, निर्विकारी और इसलिए शमिल होनेवाला, इसमें सज्जनों के मन विलीन रहते हैं, साधुओं के मन में शयनित रहनेवाला, समस्त शुभ चिह्नों से युक्त रहनेवाला। शिवं का ध्वन्यार्थ - मंगल, शुभ, कैवल्य, श्रेयस है। रात्रि, सुख प्रदान करने वाला समय होता है। शिवरात्रि का अर्थ है- शुभों से युक्त, सुखप्रदाता, महाशिवरूपी ब्रह्मानंद को प्रदान करनेवाला।

शिवरात्रि को चूँकि, परमशिव ने लिंग रूप धारण किया, इसलिये लिंगोद्भव संबंधी विशेषताएँ जानने योग्य हैं। अट्ठारह कल्पों में, ईशानकल्प एक है और इसी कल्प में लिंगोद्भव हुआ था। एकदा समय में, विष्णु एवं ब्रह्म, शिवमाया के कारण, अपने को दूसरे से श्रेष्ठ मानकर वाद-विवाद में उलझ गये और अंत में दोनों ने एक दूसरे पर पाशुपतास्त्र को छोडने के लिए सन्नद्ध हुए। इतने में, दोनों के बीच महातेजोमय आदि-मध्य-अंतरहित लिंगाकार का साक्षात्कार हुआ। उसको देखते ही, दोनों ने उलझन छोड़ा और आश्चर्यपूर्वक इसके आदि-अंत रूप को जानने के लिये ब्रह्म ने हंस रूप, विष्णु ने श्वेतवराह का रूप धारण किया। ब्रह्म ने कहा- 'मैं शिर भाग देखकर आऊँगा।' विष्णु ने चरण भाग को ढूँढ आने का वचन लिया। बहुत दूर जाने पर भी दोनों ही उस तेजोरूप का आदि-अंत रूप को देख नहीं पाये।

इस संदर्भ में चूँकि श्रीमन्नारायण ने श्वेतवराह का रूप धारण किया, इसलिए उस महाशिवरात्रि से इस कल्प को 'श्वेतवराहकल्प' का नाम निर्धारित हुआ और यही शिवपुराण ने भी घोषित किया। हम पूजा करते समय, संकल्प लेते हुए नित्यप्रति 'श्वेतवराहकल्पे' कहकर

परोक्ष रूप से शिवरात्रि का स्मरण करते हैं। इस प्रकार एक कल्प समय के लिए कारणभूत महाशिवरात्रि, समय के प्रवाह में एक महापर्व, एक महापरतत्व के रूप में स्थापित हो गया।

परमेश्वर, जो सर्वव्यापी है, उसका कोई निर्धारित रूप होता नहीं है। लेकिन सभी को दर्शन देने के लिये उसने 'सांबमूर्ति' के रूप में आज के दिन आविर्भूत हुआ। उसका ज्ञानरूप निराकार है। ज्ञान, एकतेज रूप होता है। वही ज्ञानतेज राशिभूत (ढेर रूप) होकर 'ज्योतिर्मय लिंग' के रूप में साक्षात्कार दिया। चर्मचक्षुओं को किसी आकार को दिखाई देने के लिये ज्योति की आवश्यकता होती है। इसीलिये परमशिव ने प्रथमतः ज्योतिर्लिंग, उसके उपरांत सांबशिव बनकर, विष्णु और ब्रह्म को दिखाई दिया। इस आविर्भाव का समय आधीरात का था। वही समय ज्योति को तेज दिखाई देने के लिये उचित समय होता है। उसी समय को परमशिव ने ज्योतिर्मयी होकर सभी को दर्शन प्रदान किया तथा उसको महाशिवरात्रि के रूप में स्थापित किया। यही 'महालिंगोद्भव' दिव्य समय कहा गया है।

''शिवाय नमस्तुभ्यम्''– ऐसी बात जब मुँह से निकलती है, तब वह समस्त पापों का विनाश करनेवाला पावन तीर्थ बन जाता है। जो मनुष्य प्रसन्नतापूर्वक उस मुख का दर्शन करता है, उसे निश्चय ही तीर्थ सेवन जनित फल प्राप्त होता है। शिव का नाम, विभूति(भस्म) तथा रुद्राक्ष - ये तीनों त्रिवेणी के समान परम पुण्यमय माने गये हैं। जहाँ ये तीनों शुभतर वस्तुएँ सर्वदा रहती हैं, उसके दर्शनमात्र से मनुष्य त्रिवेणी स्नान का फल पा लेता है। भगवान शिव का नाम 'गंगा' है, विभूति 'यमुना' और रुद्राक्ष को 'सरस्वती' कहा गया है। इन तीनों का सम्मिश्रण समस्त पापों का नाश करनेवाली है। इन तीनों की महिमा को भगवान महेश्वर के बिना दूसरा कौन भली भाँति जानता है? इस ब्रह्माण्ड में जो कुछ है, वह सब तो केवल भगवान महेश्वर ही जानते हैं। समस्त पापों को हर लेनेवाला सर्वोत्तम साधन है भगवान परमेश्वर का नाम स्मरण। यह सत्य है कि शिव के नाम स्मरण मात्र से महान पातकरूपी पर्वत अनायास ही भस्म हो जाता है। पापमूलक जो नाना प्रकार के दुःख हैं, वे एक मात्र शिवनाम से ही नष्ट होनेवाले हैं। दूसरे साधनों से प्रयत्न करने पर भी पूर्णतया नष्ट नहीं होते हैं। जो मनुष्य इस भूतल पर हमेशा भगवान शिव के नामों के जप में ही लगा हुआ है, वह वेदों का ज्ञाता माना जाता है। ऐसा मनुष्य पुण्यात्मा है, तथा विद्वान माना गया है। जो मनुष्य शिवनामरूपी नौका पर आरूढ हो संसार रूपी समुद्र को पार करते हैं, उनके जन्म-मरण रूप संसार के मूलभूत वे सारे पाप निश्चय ही नष्ट हो जाते हैं। जो पापरूपी दावानल से पीडित हैं, उनको शिवनाम रूपी अमृत का पान करना चाहिए। पापों के दावानल से दग्ध होनेवाले लोगों को उस शिव-नामामृत के बिना शांति नहीं मिल सकती।

जिसके मन में भगवान शिव के नाम के प्रति कभी खण्डित न होनेवाली असाधारण भक्ति प्रकट हुई है, उसी के लिए मोक्ष सुलभ है।

जो अनेक पाप करके भी भगवान शिव के नाम-जप में लग गया है, वह समस्त पापों से मुक्त हो जाता है। जैसे वन में दावानल से दग्ध हुए वृक्ष भस्म हो जाते हैं, उसी प्रकार शिवनामरूपी दावानल से दग्ध होकर उस समय तक के सारे पाप भस्म हो जाते हैं। भगवान शिव के नाम का जप संसार सागर को पार करने के लिए सर्वोत्तम उपाय है।

शिवरात्रि के दिन आविर्भूत तेजोलिंग रूप को, शिलारूप में गोचर शिवलिंग में देखते हुए, रुद्राभिषेक

करते समय, ध्यानम् और स्मरण करके शिव पूजा करना है।

साधारणतया, 'लिंग' स्वरूप (आकार) संकेत करनेवाला होता है। लेकिन शिव के लिये विशेषतया ''गमयति इति लिंगम्'' यानी प्रकृति में विलीनात्मक जो परमात्मा का स्वरूप है, जो ढेर रूप है, वही 'लिंग' है। इसलिये निराकार, सर्वव्यापी सच्चिदानंद शिवस्वरूप, आज साकार होकर, सर्वजन के लिये आनंद कारक, नेत्रोत्सव के रूप में गोचर होनेवाला महा पर्वदिन है। इसीलिए धर्मशास्त्र एवं पुराण यही घोषित करते हैं कि शिवरात्रि के दिन विधिवत रूप में उपवास रखकर, शिव की पूजा करके, रात को जागरण करना अवश्यंभावी है।

तेलुगु भाषा में एक कहावत है- 'जन्मको शिवरात्रि' यह इस बात को सूचित करता है कि अपने जीवन काल में कम-से-कम एक बार शिवरात्रि के दिन शिव की पूजा करके, जागरण करके, परमशिव का कृपापात्र बनना पर्याप्त है, हमारा जन्म तर जायेगा, शिवरात्रि के इस रहस्य को उपर्युक्त कहावत संकेत देता है।

''जाग्रतस्वप्न सुशुप्तिरूपं, अवस्थात्रयं, आत्मरूपेण शिवाभिन्न स्वरूपेण, राति आददाति- शिवरात्रिः''- यह व्युत्पत्ति होने के कारण, आध्यात्मिक तत्वानुभूति को प्राप्त करना और 'शिवोहं' रूपी परमाद्वैत स्थिति को प्राप्त करना ही इस शिवरात्रि का फल है।

जागरण का विशेष महत्व होता है। परमेश्वर ने क्षीरसागर के समय में कालकूट विष को कंठ में धारण किया। इसे महाशिवरात्रि के दिन ही किया था। चौदह लोकों को अपने पेट में रखकर रक्षा

करनेवाला जगत् पिता ही होता है। परमात्मा ने कालकूट विष को निगल कर समस्त लोकों को हानि से बचाया पूर्वजों का कथन है कि हम जागरण करते हुए शिव कीर्तन करेंगे तो शिवजी नहीं सोयेंगे। अगर हम भूल से सो गये तो दुनिया को हानि पहुँचेगी। इसीलिए जागरण का आचरण करने को कहा गया। जागरण का अर्थ प्रकृति में उनींदी अवस्था में स्थित शिवशक्ति को, शिवपूजा-भजन-लीलाओं के वचनों, श्रवण से जाग्रत करके, स्वयं को शिव जी मानकर, समस्त जगत को शिवमय मानकर दर्शन प्राप्त करना होगा। तभी 'जागरण' सार्थकता को प्राप्त करता है। शिवरात्रि को पूजा-जागरण करने से सारूप्य, सामीप्य, सालोक्य, सायुज्य नामक चतुर्विध मुक्तियाँ आसानी से इहलोक में, इसी योनी में प्राप्त कर सकते हैं, ऐसा आदिशंकराचार्यजी ने अपने ग्रंथ 'शिवानंद लहरी' में स्पष्ट किया। इन चारों प्रकार के मोक्ष को प्रत्यक्ष रूप में प्राप्त करना ही शिवरात्रि को जागरण करने का परमार्थ है। चतुर्थ

काल की पूजा से मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार आदि चारों का शुद्ध होना आवश्यंभावी है।

परमशिव का महाशिवरात्रि पर्वदिन को लिंगोद्भवकाल में अभिषेक करना बहुत ही शुभ माना जाता है, शिव को गाय के दूध, दही से अभिषेक करने से अच्छे स्वास्थ्य और ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है। नारियल के पानी से अभिषेक करने पर संपत्ति, गन्ने के रस से अभिषेक करने पर रिश्तेदारों से लगाव, अन्नाभिषेक करने पर राज्य की प्राप्ति होती है।

शिवरात्रि के दिन रुद्राभिषेक करने से आयु की वृद्धि होती है। अकाल मृत्यु से बचकर पूर्ण आयु के साथ जीवित रहने के लिये शिवाराधना करनी होती है। महाशिव, मृत्युंजयी है ना! एक वर्ष की अवधि में एक दिन के लिये उपवास रखकर, पूरी रात को जागे रहकर- ''हे शिव! मृत्यंजयी! परमेश्वर! शंकर! अकाल मृत्यु से मुझे बचाओ'' कहते हुए अपार भक्ति से शिव जी की आराधना करने के लिये ही इस दिन को 'महाशिवरात्रि' के नाम से स्थापित किया गया।

चार प्रकार के शिवरात्रियाँ :

नित्य शिवरात्रि, मास शिवरात्रि, यौगिक शिवरात्रि, महाशिवरात्रि - नामक चार शिवरात्रियाँ हैं। साल भर दिन-रात नियम निष्ठा से परमेश्वर की पूजा करने से उसे नित्य शिवरात्रि कहते हैं। हर महीना कृष्ण पक्ष में आनेवाला चतुर्दशी तिथि को मासशिवरात्रि कहते है। सोमवार तथा अमावास्या तिथि दोनों मिलकर जिस दिन आता है, उस दिन को उपवास रखकर शिव की पूजा करने से यौगिक शिवरात्रि कहते हैं। माघ मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी तिथि को महाशिवरात्रि कहते हैं।

पुराणों में कहा गया है कि अगर कोई व्यक्ति, महापापी ही सही, अयाचितया शिवरात्रि के दिन की शिवपूजा को देखता है, उसे निश्चित रूप से शिवसायुज्य मिल ही जाती है। शिवरात्रि की महिमा ही ऐसी है। इसके लिए सुकुमार का वृत्तांत पुष्टि देती है। सुकुमार महापापी थी, इसके बावजूद शिवरात्रि को प्रसाद चुराने के लिए जागरण कर, पूजा का वीक्षण किया और तर गया।

शिवरात्रिव्रतं नाम सर्वपापप्रणाशनम्।
आचण्डालमनुष्याणां भुक्ति मुक्ति प्रदायकम्।।

शिवरात्रि के दिन लोग शिवनाम का स्मरण करते हैं तो कुछ लोग भस्मधारण करके शिव जी की पूजा करते हैं। शिवरात्रि का व्रत सब पापों का विनाश करता है। भगवान शिव की पूजा, अर्चना करने से जागरण, पूजा और उपवास तीनों पुण्य कर्मों का एक साथ पालन हो जाता है। जिससे परम पिता परमेश्वर की कृपा प्राप्त होती है।

(गतांक से)

तिरुपति श्रीवेङ्कटेश्वर

(तिरुपति बालाजी)

हिन्दी अनुवाद - प्रो.यद्दनपूडि वेङ्कटरमण राव
प्रो.गोपाल शर्मा

13. कुमारधारा तीर्थम्

यह तीर्थ मंदिर की वायुव्य दिशा में छः मील की दूरी पर स्थित है। माघ मास (फरवरी) की पूर्णिमा का दिन यहाँ स्नान के लिए मुख्य दिन माना जाता है। इस तीर्थ में स्नान 'गंगा स्नान' सम फल प्रदान करता है। पवित्र तिथि पर बालाजी के मंदिर से 'प्रसादम्' यहाँ भेजा जाता है एवं भक्तों में वितरित होता है। इस तीर्थ पर कार्तिकेय जी ने (कृत्तिका नक्षत्र में जन्मे महाशिव पुत्र कुमारस्वामीजी) देवसेना के साथ श्री वेंकटेश्वर की आराधना की है। कार्तिकेय के ही अन्य नाम कुमार, कुमारस्वामी और सुब्रह्मण्यम् हैं। (वरा. पु. भाग - 2, अ. 1, श्लो. 61 - 65)। कुमारस्वामी ने अपने ब्रह्महत्या दोष से मुक्ति पाने के लिए इस तीर्थ के पास तपस्या की। कुमार को तारकासुर के वध से ब्रह्महत्या दोष मिला था। तारकासुर ब्रह्म वंश का था। देवताओं की रक्षा के लिए कुमारस्वामी जी ने तारकासुर का वध किया। उन्होंने दोष से मुक्त होने के लिए अष्टाक्षरी मंत्र (ओम् नमो वेंकटेशाय) का जप करते हुए तपस्या की थी। तपस्या स्थल यही तीर्थ था। इसीलिए इस तीर्थ का नाम 'कुमारधारा तीर्थ' पडा। (मार्कण्डेय पु. अ.4)। मान्यता है कि कुमारस्वामी ने श्री वेंकटेश्वर स्वामी को किरीट(मुकुट) अर्पित किया है।

एक समय एक बूढे भक्त ब्राह्मण ने अपनी आँखों की दृष्टि खोयी। रास्ता भूल गया। पहाडी रास्तों से लुढका। लुढकते-लुढकते ''कुमार कुमार'' पुकारते अपने पुत्र का स्मरण किया। उस समय श्री वेंकटेश्वर एक युवक का रूप धारण कर उस पहाडी प्रांत में विहरण कर रहे थे। उस बूढे ब्राह्मण को लुढकते देखा। संभाला और पूछा कि उन्हें क्या चाहिए। बूढे ब्राह्मण ने उत्तर दिया - ''मैं जर्जर हूँ। मुझमें लेश मात्र शक्ति भी नहीं है। मैं नित्य नैमित्तिक धार्मिक कार्य निर्वहण नहीं कर सकता हूँ। मेरा कोई अपना नहीं है। मैं अपने आश्रम का रास्ता भी नहीं जान पा रहा हूँ। मैं एक निरीह ब्राह्मण हूँ, गरीब हूँ। भगवान ने मुझे पूर्ण आयु तो दी है, लेकिन केवल गरीबी की कठिनाइयों को झेलते और दुःखों को भोगते ही दिन काटे हैं।''

वृद्ध ब्राह्मण की दयनीय गाथा सुनकर भगवान ने मुस्कुराते हुए पूछा - ''तुम्हारा देह जर्जर है। अंधे भी हो गये हो। क्या तुम अब भी और जीना चाहते हो? सत्य बोलो।''

प्रत्युत्तर में वृद्ध ब्राह्मण ने कहा - ''हे युवक! मेरी स्थिति वास्तव में अब दुर्भर है। फिर भी भगवान की कृपा से मेरा जीवन और बढेगा तो मैं धार्मिक कार्यों का निर्वाह करना चाहता हूँ। नित्य पूजाएँ करना चाहता हूँ। मैं यज्ञ-यागादि द्वारा देव ऋण से मुक्त होना चाहता हूँ। तब जाकर मैं इस पार्थिव शरीर से मुक्त होना चाहूँगा।''

इस पर युवा (भगवान वेंकटेश्वर जी) ने बूढे का हाथ अपने हाथ में लिया। पवित्र तीर्थ पर ले गया। तीर्थ में नहाने के लिए ब्राह्मण से कहा। यह भी कहा कि तीर्थ स्नान के बाद दोनों मिलकर ही उसके आश्रम में जायेंगे। ब्राह्मण ने तीर्थ में एक डुबकी ली। आश्चर्य, वह सोलह वर्ष का युवक हो गया। तब युवक रूपधारी भगवान ने सहस्र शीर्ष, सहस्र हस्त वाले पुरुष रूप लिया। स्वर्ग से देवता समूह ने उन पर फूलों की वर्षा बरसायी। उस अनोखे दृश्य को देखकर परम आनंद प्राप्त किया। ब्राह्मण आश्चर्यचकित हो, हाथ जोडकर रह गया। भगवान ने ब्राह्मण से कहा - ''मैंने तुमको एक शक्तिशाली शरीर दिया है। आवश्यक संपत्ति भी दी है। अब तुम अपने यज्ञ-यागादि धार्मिक कर्मकांड का निर्वाह करो। सुखी जीवन बिताओ। अपनी आशाओं की पूर्ति कर लो।'' बस, भगवान अन्तर्धान हो गये।

देवताओं ने भगवान की भूरि-भूरि प्रशंसा की। बूढा ब्राह्मण अब युवा बना गया। कहा जाता है कि उसके ''कुमार'' (युवा) बनने की घटना के कारण ही उस तीर्थ का नाम ''कुमारधारा'' तीर्थ पडा। इससे एक विश्वास भी हो गया कि इस तीर्थ में पवित्र स्नान करनेवालों की सारी कामनाएँ संपन्न हो जायेंगी। अंततः विष्णु के चरणों में स्थान भी प्राप्त होगा। (वरा. पु. भाग - 1, अ. 5, श्लो. 31 - 52 और मार्कण्डेय पु. अ. 3, श्लो. 11 - 43)

14. तुम्ब, तुंबुर कोना या फल्गुनी तीर्थ

यह तीर्थ भगवान के मंदिर की उत्तर दिशा में घने जंगल के बीच है।

मीन मास (मार्च - अप्रैल) में पूर्णिमा का दिन यहाँ तीर्थ स्नान के लिए पवित्र दिन माना गया है। वह उत्तर फल्गुनी नक्षत्र का ''मुक्कोटि'' का दिन अति पवित्र है। मोक्षप्रद भी है। इस तिथि पर तीन करोड (मुक्कोटि)

देवता यहाँ आकर पवित्र स्नान करते हैं। यह विश्वास आज भी है। इस तीर्थ में पवित्र स्नान से सारी व्यथाएँ दूर होती हैं और पुनर्जन्म की भी छूट मिल जाती है। (वरा. पु. भाग - 2, अ. 1, श्लो. 66 - 68)

एक समय इस तीर्थ के पास एक गंधर्व (देवता संगीतज्ञ) रहता था। उसकी कामना थी कि उसे और उसकी पत्नी को इस पवित्र तीर्थ में स्नान का फल मिले। उसकी इच्छा थी कि दोनों मिलकर माघ मास (मार्च - अप्रैल) में सूर्योदय के समय पर ही पवित्र स्नान करें। अपना आश्रम रंगोलियों से अलंकृत हो (साफ - सुथरा) परिशुभ्र रहें। प्रसाद बनाकर भगवान को नैवेद्य चढायें। अधिदेवता का प्रदक्षिणा-नमस्कार करें। तत्परिणाम स्वरूप अरिषड्वर्गों की पीडा से मुक्त हो। (अरिषड्वर्ग हैं - काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद और मात्सर्य।) पत्नी समेत उसे मोक्ष मिले। गंधर्व की पत्नी ने इस प्रकार के

निर्वहरण में साथ देने से इनकार किया। क्योंकि वह शीत काल का समय था। ठंडी जलधाराओं को वह सहन नहीं कर पायेगी। गंधर्व क्रुद्ध हो गया। पत्नी को भेड बन जाने का शाप दिया और कहा कि वह जाकर एक वृक्ष के नीचे बिल में रहे। पत्नी ने पति के पैरों पर गिरकर क्षमा याचना की। तब गंधर्व ने कहा कि उसका वह भेड का रूप उस समय तक रहेगा जब अगस्त्य मुनि अपने शिष्यों समेत यहाँ पधारेंगे। उनके यहाँ पर पहुँचते ही पूर्व रूप मिल जायेगा। गंधर्व के कथन के अनुसार अगस्त्य महामुनि उस तीर्थ में शिष्यों के साथ लेकर आये। शिष्यों को उन्होंने तीर्थ का माहात्म्य (महिमा) सुनाया। उस माहात्म्य गाथा को गंधर्व की पत्नी ने भी भेड के रूप में सुना। तब उसका शाप दूर हो गया और उसने अपना पूर्व रूप पाया। गंधर्व की पत्नी पुनः गंधर्वी बनी।

उस गंधर्व के नाम पर इस तीर्थ का नाम 'तुंबुरु तीर्थ' पडा। (स्कंद. पु. अ. 16)

इस तीर्थ के पास तरिगोंडा वेंगमांबा ने श्री वेंकटेश्वर को पाने के लिए तपस्विनी बनकर तपस्या की। यह 19वीं शताब्दी के प्रारंभ में घटित हुआ। वेंगमांबा की तपस्या का स्थान आज भी दर्शनार्थियों के लिए प्राप्य है। (हाल ही में तरिगोंडा वेंगमांबा के नाम पर भक्तों के लिए एक अन्नप्रसाद वितरण भवन का निर्माण भी हुआ है। उसमें हजारों की संख्या में भक्त नित्यप्रति अन्नप्रसाद ग्रहण करते हैं।)

क्रमशः

ऋ षि-मुनि

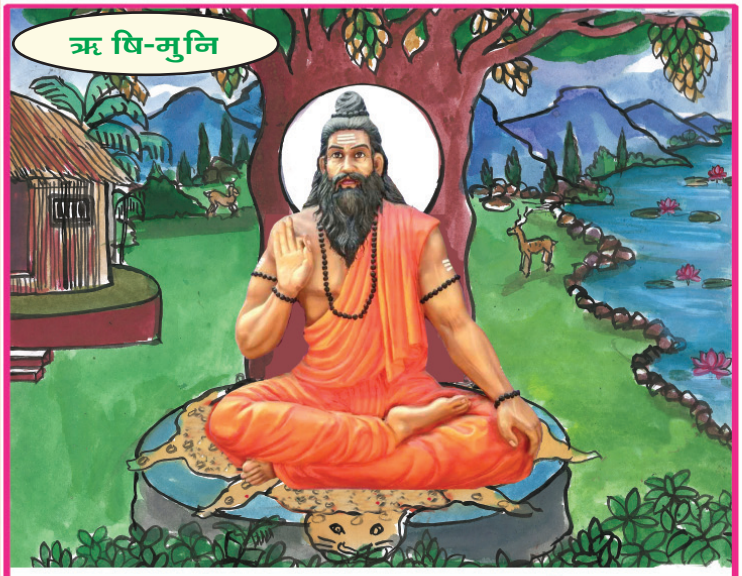

भरद्वाज ऋषि

-डॉ.जी.सुजाता, मोबाइल-9494064112.

वैदिक ऋषियों में भरद्वाज ऋषि का अति उच्च स्थान है। ऋग्वेद के छठे मंडल के द्रष्टा ऋषि भरद्वाज हैं। इस मंडल में भरद्वाज के 765 मंत्र हैं। अथर्वणवेद में भी ऋषि भरद्वाज के 23 मंत्र मिलते हैं।

महर्षि भरद्वाज ऋषि अंगिरा के पौत्र व बृहस्पति के पुत्र माने जाते हैं। अंगिरा के पुत्र बृहस्पति का पुत्र होने के कारण इन्हें अंगिरस भी कहा जाता है। अंगिरा के सभी पुत्रों में बृहस्पति सबसे ज्ञानी होने के कारण बृहस्पति को देवताओं का गुरु होने का गौरव प्राप्त हुआ था। देवगुरु बृहस्पति की एक पत्नी का नाम शुभा और दूसरी का तारा है। शुभा से 7 कन्याएँ उत्पन्न हुई और तारा से 7 पुत्र तथा 1 कन्या उत्पन्न हुई। उनकी तीसरी पत्नी ममता से भरद्वाज और कच नामक 2 पुत्र उत्पन्न हुए।

भरद्वाज की पत्नी का नाम ध्वनि बताया जाता है। महर्षि भरद्वाज के दस पुत्रों में ऋजिष्वा, गर्ग, नर, पायु, वसु, शास, शिराम्बिठ, शुनहोत्र, सप्रथ और सुहोत्र ऋषि ऋग्वेद के मंत्र द्रष्टा हैं। उनकी 2 पुत्रियाँ थीं रात्रि और कशिपा। इस प्रकार ऋषि भरद्वाज की 12 संतानें थीं।

अग्नि के सामर्थ्य को आत्मसात कर भरद्वाज ने अमृत तत्व प्राप्त किया था। और स्वर्ग लोक जाकर आदित्य से सायुज्य प्राप्त किया था। यही कारण है कि ऋषि भरद्वाज सर्वाधिक आयु प्राप्त करनेवाले ऋषियों में से एक माने गये थे। और चरक ऋषि अपने सूत्र $^{1}/_{26}$ में उन्हें अपरिमित आयु वाला बताने को विवश हुए थे।

वेदादि ग्रन्थों से लेकर रामायण, महाभारत ग्रन्थों तक सर्वत्र भरद्वाज परम्परा का उल्लेख प्राप्य है। लेकिन भरद्वाज सम्बन्धी इस उल्लेखों के अध्ययन से उनका जन्म वृत्तांत अत्यंत विचित्र प्रतीत होता है और इनकी लम्बी अवधि तक अर्थात भारतीय परम्परा के अनुसार एक युग से कई युगों तक उपस्थिति अर्थात जीवित रहने की कथाओं से स्पष्ट होता है कि यह सब वृत्तांत किसी एक भरद्वाज का नहीं, बल्कि कई भारद्वाजों का है। अर्थात भरद्वाज वंश में पैदा हुए पृथक-पृथक मुनि-भरद्वाजों के हैं। ऋग्वेद, अथर्वण वेदादि, उपनिषद ग्रन्थ और महाकाव्यों में तो भरद्वाज का उल्लेख है ही, भरद्वाज सम्बन्धी वृत्तांत श्रीमद्भागवत पुराण, मत्स्यपुराण, ब्रह्म पुराण और वायु पुराण में भी विस्तार से वर्णित है। भरद्वाज के जन्म की विचित्र कथाएँ पौराणिक ग्रन्थों में अंकित हैं।

वाल्मीकि रामायण के अनुसार एक भरद्वाज ऋषि राम के पूर्व हुए थे, लेकिन एक त्रेतायुग में भी उपस्थित थे, जो ऐतिहासिक दृष्टि से त्रेता-द्वापर का संधिकाल था। और वनवास के समय श्रीराम भरद्वाज आश्रम में गए थे। भरद्वाज को त्रेतायुग में श्रीराम से मिलने का सौभाग्य दो बार प्राप्त हुआ था। वाल्मीकि रामायण अयोध्या काण्ड $^{54}/_{5}$ के अनुसार वन जाते समय और फिर लंका-विजय के पश्चात वापस लौटते समय श्रीराम भरद्वाज के आश्रम में गये थे। द्वापरयुग में भी इनकी उपस्थिति रही है, और भरद्वाज, धर्मराज, युधिष्टिर के राजसूय-यज्ञ में भी आमंत्रित थे। महाभारत के अनुसार अजेय धनुर्धर तथा कौरवों और पांडवों के गुरु द्रोणाचार्य इन्हीं के पुत्र थे। उक्त प्रमाणों से भरद्वाज ऋषि को अपरिमित आयुवाला कहा गया है।

भरद्वाज प्राचीन भारत में पूजनीय वैदिक ऋषियों में से एक थे, जो एक प्रसिद्ध विद्वान, अर्थशास्त्री और प्रख्यात चिकित्सक थे। उन्होंने व्याकरण का ज्ञान इन्द्र से प्राप्त किया था तो महर्षि भृगु ने उन्हें धर्मशास्त्र का उपदेश दिया। ऋक्तंत्र के अनुसार वे ब्रह्म, बृहस्पति एवं इन्द्र के बाद चौथे व्याकरण-प्रवक्ता थे। वायु पुराण के अनुसार उन्होंने एक पुस्तक आयुर्वेद संहिता लिखी थी, जिसको इन्होंने आठ भागों में बाँटा था, जो अष्टांग आयुर्वेद के नाम से प्रचलित है। महर्षि ने इन आठों भागों को पृथक-पृथक कर इनका ज्ञान अपने शिष्यों को दिया था। इन्होंने आयुर्वेद पर विश्व में प्रथम संगोष्ठी का आयोजन भी किया था।

भरद्वाज का उल्लेख 'चरक संहिता' में भी है, जो एक अधिकारिक प्राचीन भारतीय चिकित्सा ग्रंथ है। महर्षि भरद्वाज को ''चिकित्सा का जनक'' (आयुर्वेद) माना जाता है। चरक संहिता के अनुसार उन्होंने आत्रेय पुनर्वसु को कायचिकित्सा का ज्ञान प्रदान किया था।

प्राचीन भारतीय साहित्य में मुख्य रूप से पुराणों और ऋग्वेद में, उनका बडा योगदान रहा। ऋषि भरद्वाज ने व्याकरण, आयुर्वेद संहिता, धनुर्वेद, राजनीतिशास्त्र, यंत्रसर्वस्व, अर्थशास्त्र, पुराण, शिक्षा आदि अनेक ग्रंथों के रचयिता हैं। उनमें से यंत्र सर्वस्व और विमानशास्त्र की आज भी चर्चा होती है।

ऋषि भरद्वाज ने यंत्र-सर्वस्व नामक बृहद ग्रंथ की रचना की थी। इस ग्रन्थ में उच्च और निम्न स्तर पर विचरनेवाले विमानों के लिए विविध धातुओं के निर्माण का वर्णन मिलता है। भरद्वाज के विमानशास्त्र में यात्री विमानों के अलावा, लड़ाकू विमान और स्पेस शटल यान का भी उल्लेख मिलता है। उन्होंने एक ग्रह से दूसरे ग्रह पर उड़ान भरने वाले विमानों के संबंध में भी लिखा है, साथ ही उन्होंने वायुयान को अदृश्य कर देने की तकनीक का उल्लेख भी किया था।

ऋषि भरद्वाज को प्रयाग का प्रथम वासी माना जाता है अर्थात ऋषि भरद्वाज ने ही प्रयाग को बसाया था। प्रयाग में ही उन्होंने धरती के सबसे बड़े गुरुकुल (विश्वविद्यालय) की स्थापना की थी और हजारों वर्षों तक विद्या दान करते रहे। वे शिक्षाशास्त्री, राजतंत्र मर्मज्ञ, अर्थशास्त्री, शस्त्रविद्या विशारद, आयुर्वेद विशारद, विधि वेत्ता, अभियांत्रिकी विशेषज्ञ, विज्ञानवेत्ता और मंत्र द्रष्टा थे। महर्षि भरद्वाज की शिक्षा मानव जीवन के लिए अनिवार्य, उपयोगी तथा उत्कर्षक थी। आज का गुरुकुल अथवा विद्यालय, विश्वविद्यालय भी उन्ही की सोच, विचार का प्रतिफल है।

ऋषि भरद्वाज ने प्रयाग के अधिष्ठाता भगवान श्री माधव जो साक्षात श्रीहरि हैं, की पावन परिक्रमा की स्थापना भगवान श्री शिव जी के आशीर्वाद से की थी। ऐसा माना जाता है कि भगवान श्री द्वादश माधव परिक्रमा संसार की पहली परिक्रमा है। ऋषि भरद्वाज ने इस परिक्रमा की तीन स्थापनाएँ दी हैं -

1) जन्मों के संचित पाप का क्षय होगा, जिससे पुण्य का उदय होगा।

2) सभी मनोरथ की पूर्ति होगी।

3) प्रयाग में किया गया कोई भी अनुष्ठान/कर्मकाण्ड जैसे अस्थि विसर्जन, तर्पण, पिण्डदान, कोई संस्कार यथा मुण्डन यज्ञोपवीत आदि, पूजा पाठ, तीर्थाटन, तीर्थ प्रवास, कल्पवास आदि पूर्ण और फलित नहीं होंगे जब तक स्थान देवता अर्थात भगवान श्री द्वादश माधव की परिक्रमा न की जाए।

भरद्वाज एक जातिवाची नाम है, और वर्तमान में भी जैसे कोई जातिवादी नाम पीढ़ी दर पीढ़ी व्यक्तियों के साथ जुड़ा रहकर चलता रहता है, वैसी ही भरद्वाज की परम्परा भी प्राचीन काल से चलती आ रही है।

तीर्थराज प्रयाग में संगम से थोड़ी दूरी पर इनका आश्रम था, जो आज भी विद्यमान है। कथाओं के अनुसार बताया जाता है कि महर्षि भरद्वाज ने प्रयाग के इस आश्रम में एक शिवलिंग की स्थापना की थी, जिसे 'भरद्वाजेश्वर शिव' के नाम से जाना जाता है। यह आज भी इस आश्रम परिसर में मौजूद है। उसी भरद्वाज मुनि के आश्रम के सामने भरद्वाज पार्क में 2019 में भरद्वाज मुनि की 30 फिट की भव्य प्रतिमा स्थापित की गई।

नीति पद्यम्

आन्ध्र देश के कबीर श्री वेमना

(संत वेमना की कुछ चुनी हुई रचनायें)

मूर्ख-पद्धति

कुक्क तोक देच्चि गोट्टंबु जेर्चिन
क्रोवि चेंत नुंडु कोंत तडवु
एंत जेप्प जेडुगु पंतंबु मानुना?
विश्वदाभिरामा विनुरवेमा ।।७।।

मूर्ख को कितना भी समझाया जावे, वह अपनी जिद नहीं छोड़ता। जब तक उपदेशक सामने रहता है, उसके प्रवचनों में आसक्ति दिखाता है। ज्योंही वह दृष्टि से ओझल हो जाता है, फिर से अपना चरखा चलाने में लग जाता है। उसका स्वभाव कुत्ते की दुम जैसा है जो कि सौ बरस तक नली में रखी जावे, बाहर निकालने पर टेढ़ी की टेढ़ी रह जाती है।

अप्रैल २०२२

०२ 'श्री शुभकृत्' तेलुगु नूतन वर्ष 'उगादि'
०३ श्री मत्स्यजयंती
०६-१४ वायल्पाडु श्री पट्टाभिरामस्वामीजी का ब्रह्मोत्सव
१०-१८ ऑटिमिट्टा श्री कोदंडरामस्वामीजी का ब्रह्मोत्सव
१० श्रीरामनवमी
१४ तमिल नूतन वर्ष, डॉ.बी.आर.अंबेडकर जयंती
१४-१६ तिरुमल श्री बालाजी का वसंतोत्सव
१६-२४ नागुलापुरम् श्री वेदनारायणस्वामीजी का ब्रह्मोत्सव

श्री वेंकटाचल की महिमा

(हिंदी गद्यानुवाद)

तेलुगु मूल
मातृश्री तरिगोंडा वेंगमांबा

हिंदी अनुवाद
आचार्य आई.एन.चंद्रशेखर रेड्डी
मोबाइल - 9849670868

प्रथम आश्वास

अवतारिका

इष्ट देवता स्तुति :

काव्यारंभ में कवयित्री मातृश्री तरिगोंडा वेंगमांबा ने अपने इष्ट देवताओं की स्तुति की है। इस में तरिगोंडा शेषकुधराक्ष स्वामी प्रप्रथम हैं, बाद में आदिलक्ष्मी, श्री विघ्नेश्वर, ब्रह्म, शिवादि, अक्षर शारदा, सरस्वती, अक्षर मातृकाएँ, कुल देवी चौडमांबा, हयग्रीव, अनंत, गरुड, विश्वक्सेन, गोविंद राजु, श्रीराम, श्रीकृष्ण, वराह मूर्ति, वेंकटाचलपति, तरिगोंडा नरसिंह, नवग्रहादि की वंदना की है। इन देवताओं का वर्णन अत्यद्भुत है।

पूर्व कवियों की वंदना :

प्राचीन तेलुगु कवियों की तरह वेंगमांबा ने भी काव्यारंभ में अपने पूर्व कवियों की विनम्र वंदना की है। आदिकवि वाल्मीकी को, व्यास भगवान को, कालिदास कवि को, श्री वेंकटेश्वर से वर प्राप्त करनेवाले अन्नमाचार्य को, तेलुगु में आदिकवि के रूप में गौरव प्राप्त करनेवाले नन्नया को, तिक्कना को, पोतराजु को इन से अलग सुकवियों को, पंडितों को और पौराणिकों को भक्ति से नमस्कार कर रही हूँ।

श्रीनिवास के चरणों में समर्पण करके मुक्ति की कांक्षा रखनेवाली मैं 'वेंकटाचल माहात्म्यम' के वैभव को छंदोबद्ध पद्यों में रच रही हूँ।

कवयित्री की विनति :

काव्य लेखन के पहले कवयित्री ने पंडितों और जनता से विनम्र विनति की है। हे पंडितगण, हे जन अब मेरी बाल भाषा का विरोध न करते हुए सुनिए। जैसे माता-पिताओं को अपने बच्चों की बातें बुरी नहीं लगती हैं, वैसे ही आप मेरी भाषा की अशुद्धियों को पकड कर मेरी निंदा न करके काव्य को स्वीकार कीजिए। और भी आप को संदेह होगा कि तेलुगु में इतनी महाकृतियों के होते मेरी इस बाल कृति को क्यों पढना है? ऐसा मत सोचिए।

जैसे मिठाई और पक्कान खाने के बाद नमकीन खाया जाता है वैसे ही उन महाकृतियों को पढने के बाद मेरी इस बालकृति को अवश्य पढेंगे, ऐसी आशा से मुझे क्षमा करके

कृपया मेरे इस काव्य के बारे में सुनिए। मेरे काव्य के बारे में बताऊंगी कृपया सुनिए। राजीव लोचन, सत्करुणमूर्ति मुझ में बसे हुए हैं, ऐसे भक्ति भाव से योग क्रम से अत्यंत सुंदर ढंग से तेलुगु की रीति का पालन करते हुए अपनी कृति को प्रकट करूंगी।

अपने बचपन में मैंने गुरुओं के पास अक्षर भी नहीं सीखे हैं। तेलुगु के छंद शास्त्र की जानकारी लेकर दस पद्य भी सचमुच ही कभी नहीं सीखे हैं। काव्य, नाटक, अलंकार आदि शास्त्रों को पढा भी नहीं है। पूर्व के इतिहासों को, तेलुगु में विस्तृत रूप से रचे काव्यों को पढकर कोई शोध कार्य भी नहीं किया।

सिर्फ तरिगोंडा श्री लक्ष्मीनरसिंहस्वामी की आज्ञा से अपने को निमित्त बनाकर बताऊंगी। ढूंढने पर भी इस में मेरा कोई स्वार्थ नहीं है।

लकडी से बनी वीणा के बजने की तरह, गायक के गाने की तरह दयापूर्ण पुरुषोत्तम ही मेरी जीभ पर लास्य करते हुए लिखवा रहे हैं। लेखनी तो मेरी है किंतु लिखनेवाली मैं नहीं हूँ। वे तो पुरुषोत्तम हैं। यह द्विपद छंद में रचा यह भागवत पुराण भी उन्हीं का है। यहाँ कवयित्री ने तेलुगु के महाकवि पोतना का स्मरण किया है। उन्होंने भी द्वादश स्कंधों में भागवत को रचकर अपने इष्टदेव रामचंद्र को समर्पित किया। और लिखवाने की प्रेरणा उन्हीं की बतायी है। वैसे वेंकटाद्री की महिमा को मैं इस धरती पर पद्य काव्य के रूप में रच कर श्रीनिवास को ही समर्पण करना चाहती हूँ। मक्खी के सागर लांघने की तरह मेरे इस दुस्साहस पर शायद पंडितगण हँसेंगे! मुझ पर हँसने पर भी अत्यंत उन्नत रूप से श्री वेंकटेश्वर के निवास स्थल वेंकटगिरि पुर (आज का तिरुमल तीर्थ) का थोडा वर्णन करूँगी।

वेंकटगिरि नगर वर्णन :

बडे-बडे गोपुर, प्राकारों से बने मंडप, अनेक रथ, पवित्र पुण्य तीर्थ, कमलों की किरणों से शोभित सोने के शिखर, पवित्र परिवार देवतालय, अत्यंत महिमावाले विरक्ति को जगानेवाले मठ, युद्ध में कोलहल करनेवाले हाथी, घोडे, अत्यंत सुंदर दिखनेवाली साधु गायें और भी सुंदर तुतली में बोलनेवाले तोते, नील कंठ पक्षीगण, विस्तारित लता-वितान, फलों के वृक्ष, तुलसी आदि पौधे, अनेक कुसुम आदि से वेंकटगिरि नगर लदलदा है।

इस के अतिरिक्त वेद, पुराण, शास्त्रादि की विद्या से भरपूर विवेकवान विप्रजन, महनीय सत्य, धर्म, पराक्रम आदि से संपन्न बलवान राजागण, रमणीय कृषि करनेवाले कृषक, गोरक्षा और वाणिज्य करनेवाले संपन्न वैश्यगण, ब्राह्मणों की बहु सेवा करके विनम्र रहनेवाले शूद्रजनों से वेंकटगिरि नगर भरा था।

इस के अतिरिक्त लंबी व सीधी गलियाँ, अनेक श्रृंगार वन, अनेक मंदिर, कमलों से भरे सरोवर आदि के होते वेंकटगिरि नगर पृथ्वी पर अत्यंत कीर्तिवान बन गया था।

भूवराहस्वामीजी के पूरब दिशा में, श्रीनिवास मंदिर की ईशान दिशा में स्पटिक-कांतिमय सीढियों के बीच में मरकत-कांति से सुशोभित श्री स्वामी की पुष्करिणी है। जन-जन के पापों को दूर करनेवाला है। तीर्थ यात्रा करनेवाले यात्री देश-काल के अनुसार संकल्प करके यहाँ दान करते हैं। उन्हें धर्म-शास्त्र विधि से दान करवाकर धनार्जन करनेवाले पंडितगण भी हैं। तीर्थ स्नान के उपरांत यात्री श्रीहरि को अपनी मनौतियों को समर्पण करते हैं।

पुष्करिणी की पश्चिम दिशा में भूवराहस्वामीजी की किडकी के पूरब में मंच पर अत्यंत भक्ति के साथ निरंतर जप-तप कुछ ब्राह्मण करते थे।

मालव, नेपाल, मलयाल, बंगाल, चोल, कोंकण, सिंधु, शुरसेन, सौवीर, कुंतल, शक, कलिंग, किरात, कोसल, कैकेय, कुकुर, सालुव, द्रविड, पुलिंद, विदर्भ, महाराष्ट्र, बर्बराभीरांध्र, पांड्य, मगध, कांभोज, काश्मीर आदि देशों से भक्त वेंकटाचल पहुँचकर पुष्करिणी में डुबकी लगाकर भूवराह देव के दर्शन करके श्री वेंकटेश्वर के दर्शन करके

अपनी मनौतियों एवं संपदाओं को समर्पित करके अत्यंत संतोष के लौटते हैं। वे वेंकटगिरि में रहते समय गाते-खेलते आनंद का अनुभव करते थे।

इस के अतिरिक्त पंकजों, विविध फूलों, फलों की गंध से, मृगादि की मद-गंध से कूपर-सांभ्राणी के सौरभ से, केवडों की गंध से, जवादी तेल की गंध से वेंकटगिरि नगर सर्वथा गंध-विकीर्ण करता था।

वह नगर दिव्य तटाकों से सुशोभित, कुंभादि मध्य में, विमान के मध्य में उत्तम पुरुष, महात्मा बनकर संपदाओं से भरे, धरती पर सब से महोन्नत बन कर सदा लक्ष्मी समेत श्री वेंकटेश्वर विराजमान रहा करते हैं।

उस महात्मा के चरित को लेकर अनेक मुनियों के द्वारा संस्कृत में रचित ग्रंथों का अनुसरण करते हुए श्री नरसिंहस्वामीजी की आज्ञा से मैं (तरिगोंडा वेंगमांबा) तेलुगु में अत्यंत भक्ति से मैं पद्य काव्य रचूँगी।

षष्ट्यांत :

हेमाक्षांतक को, संग्राम-भयंकर, अखिल कारण को, श्री भूमि वराह स्वामी को, अमित फल देनेवाले करुणानिधि को, अक्षीण, शौर्य, धैर्य, हिरण्याक्षादि राक्षसों का संहार करनेवाले, अतिकोप उग्र रूपी कमलनयन को, अतिघोर सटाझटाधारी जलाधर को, राक्षसों का निवारण करनेवाले श्रीहरि को, क्षीरांबुनिध लक्ष्मीदेवी के हृदय को जीतनेवाले दुरंधर को, हार, हर, हीर, दर, शर, सारद, नारद, विभा, विभव गात्रवाले को, प्रेम से प्रह्लाद का उद्धार करनेवाले शांतमूर्ति को, भक्तों के क्लेश-कलुष को दूर करनेवाले श्रीहरि को, श्री तरिगोंडा नरसिंह को, वेंकटगिरि नायक को, पंकजभव जनक को, परमात्मा को शंकर-वर मित्र को, कलंकरहित को, मोक्ष प्रदान करनेवाले लक्ष्मी पति को समर्पित 'श्री वेंकटाचल माहात्म्यम' काव्य का कथा-क्रम इस प्रकार है।

क्रमशः

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति।

तिरुमल यात्री इनको आचरण न करें, तो अच्छा होगा।

- अपने साथ कीमती आभूषण या अधिक नकद न रखें।
- भगवान के दर्शन के लिए मात्र ही तिरुमल पधारें, अन्य किसी उद्देश्य से नहीं।
- दर्शन के लिए जल्दबाजी न करें, क्यू लाइन में ही सक्रम जाने का प्रयत्न करें।
- मंदिर के आचार-व्यवहारों के अनुरूप मंदिर में प्रवेश निषिद्ध है, तो कृपया मंदिर को न आवें।
- तिरुमल में सभी फूल भगवान की पूजा के लिए है इसलिए पुष्पों का धारण न करें।
- पानी और बिजली को वृथा न करें।
- अपरिचितों को काटेज में प्रवेश न दें। चाबियों को उन्हें न सौंपें।
- पर्यावरण प्रदूषण नियंत्रिक थैलियों के अलावा किसी अन्य प्लास्टिक थैलियों का उपयोग न करें।
- चार माडावीथियों में चप्पल धारण न करें।
- भगवान दर्शन और आवास के लिए धोखेबाज या दलाल से संपर्क न करें।
- फेरीवालों से नकली प्रसाद मत खरीदें।
- तिरुमल मंदिर के परिसरों में थूकना आदि असह्य कार्य न करें।
- सेलफोन, कैमेरा जैसी चीजें और आयुधों को मंदिर के अंदर न ले जायें।
- विविध राजकीय कार्यकलाप, सभायें, ब्यानर, रास्तारोक, हडताल आदि सप्तगिरियों पर निषेधित है।

(मिथ की महिला चरित)

सती अनसूया

-डॉ.के.एम.भवानी,
मोबाइल-9949380246.

हिंदू पुराणों के अनुसार स्त्री के लिए पति सेवा धर्म से बढ़कर कोई धर्म नहीं है। इस कथन को साबित करनेवाली बहुत सारी कहानियाँ और ऐसी कई स्त्रियों के पात्र हमें श्री रामायण और महाभारत में मिलती हैं।

पतिव्रता माने पति की सेवा करने का व्रत माननेवाली स्त्री है। ऐसी स्त्री पति को भगवान से भी बढ़कर मानती है। उसके लिए पति ही भगवान है। वह सिर्फ अपने पति सेवा-धर्म से सब कुछ कर सकती है। उसके लिए कोई भी काम असाध्य नहीं है। ऐसी स्त्रियों में अनसूया माता का स्थान अग्र गण्य माना जाता है। अपने तपोबल, पतिव्रता धर्म से त्रिमूर्तियों को प्रसन्न करके उनके अंशों से पुत्रों को पाई महान चरिता अनसूया है।

अनसूया अत्रि महामुनि की धर्म पत्नी है। अत्रि महामुनि विधाता ब्रह्म का मानस पुत्र है। ये दंपति आध्यात्मिक भावनाओं से तप साधना में लीन होकर अत्यंत पवित्र जीवन बिताते थे।

सुमति-अनसूया : एक बार सुमति नामक पतिव्रता अपने पति को बचाने के लिए सूर्य के गमन को रोक देती है। सारी सृष्टि सूर्य प्रकाश के बिना स्थगित हो जाती है। तब सारे देवगण अनसूया माता के पास जाकर उससे सृष्टि को बचाने की प्रार्थना करते हैं। तब अनसूया माता सुमति के पास जाकर उसे मनाती है कि सूर्यगमन को रोकने से सारी सृष्टि स्थगित हो जाती है। इसलिए सूर्य को चलने देना है। अनसूया माता की बातों को मानकर सुमति सूर्य को चलने देती है। सूर्योदय होते ही सुमति के पति मर जाता है तो अनसूया माता अपने तपोबल से सुमति के पति कौशिक को जिंदा बना देती है। उसे रोग मुक्त करने के साथ-साथ दीर्घायु भी देती है।

पत्थरों को चना बनाना : भगवान अपने भक्तों की इसलिए परीक्षा करता है कि इस वजह से उनके बड़प्पन सबको मालूम हो। सुर हो या मानव हो, जल्दी दूसरों की महानता को नहीं मानते हैं। इसलिए भगवान विभिन्न तरीकों से अपने भक्तों की परीक्षा करके उनकी महानता को रोशन करता है।

मानव लोक में अनसूया की बढ़ती लोकप्रियता को सुनकर देवर्षि नारद एक बार उसे परीक्षा करना चाहते हैं। इसलिए वे अनसूया माता के पास आकर उनसे कहते हैं कि उसे बहुत पेट दर्द है। कई सालों से कम नहीं हो रहा है। उसके इलाज के रूप में बताया गया है कि छोटे-छोटे पत्थर के टुकड़ों को पकाकर उन्हें चना जैसा बनाकर खाने से वह दर्द कम हो जाता है। नारद तीनों लोकों में घूम-घूम कर पूछने पर भी कोई भी साध्वी उसे ऐसे बनाकर नहीं दे सकी। अंत में नारद अनसूया के पास आने पर वे इस असाध्य काम को साध्य करके दिखाती है।

त्रिदेवों को बच्चे बनाना : सती अनसूया की महानता को साबित करने के लिए एक बार त्रिदेव यानी ब्रह्म, विष्णु और महेश्वर अनसूया के आश्रम में आते हैं और उनसे भिक्षा याचना करते हैं। उस समय अत्रि ऋषि आश्रम से बाहर गए हुए थे। जब अनसूया सब प्रबंध करके भिक्षा देने के लिए तैयार हो जाती है, तब वे अपनी यह शर्त बताते हैं कि अनसूया नंगा बनकर उन्हें भिक्षा देना चाहिए। नहीं तो वे भिक्षा लिए बिना वापस चले जाएँगे। यह सुनकर क्षण भर के लिए

अनसूया चकित हो जाती है लेकिन तुरंत अपने अतिथि धर्म को याद करके वह अपने तपोबल से त्रिदेवों को छोटे बच्चे बना कर, उन्हें झूले में डालकर अपना स्तनपान कराकर उनकी कामना पूरी करती है। पति वापस नहीं आने के कारण उन्हें ढूँढती हुई त्रिदेवियाँ लक्ष्मी, पार्वती और सरस्वती अनसूया के आश्रम में आ जाती हैं और छोटे बच्चे बनकर झूले में झूलनेवाले अपने पतियों को देखकर अनसूया माँ की महानता को मानकर उनसे अपने पतियों को वापस देने की प्रार्थना करती हैं। तो अनसूया माता फिर से अपनी पातिव्रत्य महिमा से झूले में बच्चे बनकर रहे त्रिदेवों को यथा रूप प्रदान करती हैं। इस तरह त्रिदेवियाँ अनसूया की बहू बन जाती हैं। इस महानता से बहुत प्रसन्न होकर त्रिदेव उनसे वर माँगने को कहते हैं तब अनसूया उन तीनों की सम्मिलित शक्ति से एक पुत्र को पाने की इच्छा प्रकट करती हैं। वही इच्छा गुरु 'दत्तात्रेय' के अवतार का कारण बन जाती है। दत्तात्रेय इन त्रिदेवों के वर का ही फलस्वरूप है।

रामायण में अनसूया : जब श्रीराम वनवास करते हुए चित्रकूट पर्वत पर रहते है, तब वे अत्रि-अनसूया दंपति से मिलते हैं। तब अत्रि महामुनि श्रीराम से अपनी पत्नी अनसूया का परिचय करते हुए कहते हैं कि अनसूया महान तपस्विनी हैं। उन्होंने कई बार कठिन से कठिन नियमों का पालन करती हुई तप किया था। कई बार देवताओं की भी मदद की। एक बार तो दस सुबहों को मिलाकर रात होने ही नही दिया। उन्हें गुस्सा नाम केलिए भी नहीं मालूम है। अनसूया श्रीराम के लिए माता समान है। अपनी बातों को आगे बढ़ाते हुए अत्रि ऋषि कहते हैं कि एक बार चित्रकूट के आस-पास दस साल तक बारिश न पड़ने के कारण वह सारा प्रांत सूखा पड गया था। तब मुनियों की प्रार्थना पर अनसूया अपनी तपोशक्ति से खाद्य पदार्थों की सृष्टि करके उन सबके भूख-प्यास को मिटा दिया था। गंगाजल की सृष्टि करके समस्त प्राणियों की प्यास बुझायी थी। इस तरह अपने सतीत्व के कारण अनसूया पूजनीय हैं। सीता को उन्हें पूजना चाहिए।

सीता को अनसूया पतिव्रता धर्म से संबंधित कई उपदेश भरी बातें बताती हैं। वे कहती हैं कि कितना सोचने पर भी उन्हें पति से बढ़कर कोई आत्म बंधु नहीं दिखाई पड़ता है। इसलिए स्त्री को हमेशा पति के साथ ही रहना है। सहधर्म चारिणी बनकर हर हालत में उनका अनुगमन करना है। ऐसा कहने के बाद अनसूया माँ सीता माता को उपहार के रूप में कभी भी अपने प्रकाश को न खोने वाले वस्त्र प्रदान करती हैं और कहती हैं कि यह पहनकर जिस तरह माँ लक्ष्मी विष्णु जी को खुश करती ही हैं, वैसे ही तुम श्रीराम को प्रसन्न करना है। सीता माता भी अनसूया के कहने के अनुसार वे वस्त्र पहनकर श्रीराम को खुश करती है। अनसूया माता के इस उपहार को देखकर श्रीराम भी प्रसन्न हो जाते हैं।

युग-युगों में अपने सतीत्व से यश कमाकर वंदनीय बनी अनसूया माता को प्रणाम।

(गतांक से)

मंगलाशासन आल्वार-पाशुरम्

तमिल मूल - श्री टी.के.वी.एन. सुदर्शनाचार्या

हिन्दी अनुवाद - श्री के.रामनाथन
मोबाइल - 9443322202

विण्णील मेलाप्पु विरित्ताल्पोल् मेगंगळ्

तेण्णीर् पाय् वेंगडत्तु एन् तिरुमालुम् पोन्दाने

कण्णीर्गळ् मुलैक्कुवट्टिल् तुळी सोरच्चोर्वेनैप्

पेण्णीर्मै ईडळिक्कुम् इदु तमक्कु ओर् पेरुमैये। (577)

कठिन शब्दार्थ - मेलाप्पु-चादर, मेगंगळ्-काले बादल, कण्णीर-आँसु, पेण्-नारी, नीर्मै-मर्यादा।

भावार्थ - गोदा के मन में भगवान विष्णु सदा के लिए बस गए हैं। वह सोचती है कि उनके दर्शन के बिना जीवन अधुरा है। इसलिए वह उनके निवास स्थान तिरुवेंकटगिरि में देखने आयी है। पर उसे वहाँ न पाकर व्याकुल हो उठती है। वह सोचती है कि बादल का रंग भी काला है और भगवान का रंग भी ऐसे ही है। इसलिए वह अपनी वेदना को दूर करने के लिए बादल को देखकर पूछती है, ''हे बादल, तुम तो नीले नभ पर चादर बिछाया सा हो। साफ जल बहते वेंकटगिरि पर क्या तुम्हारे साथ श्री विष्णु भी आये हैं उनकी याद में बडे प्रेम से आँखों से बहती मेरी आँसू की बूँद मेरी छाती पर गिरकर भाप बन जाती हैं। मेरी ऐसी स्त्रीत्व को नष्ट करना क्या उनके लिए उत्तम है।'' मतलब यह है कि भगवान विष्णु से मिलकर आनंद पाने की इच्छा रखती गोदा उनके वियोग के कारण तडप उठती है। उनकी याद में बहता आँसू भी तन की गरमी के कारण भाप बन जाता है।

मिन् आगत्तु एळुगिन्ऱ मेगंगाळ् वेंगडत्तुत्

तन् आगत् तिरुमंगै तंगिय सीर् मार्वर्क्कु

एन् आगत्तु इळंकोंगै विरुम्बित् ताम् नाळ्दोरुम्

पोन् आगम् पुल्गुदर्कु एन् पुरिवुडैमै सेप्पुमिने।। (580)

कठिन शब्दार्थ - मिन्-बिजली, आगत्तु-हृदय, तिरुमंगै-श्रीदेवी, नाळदोरुम्-हर दिन, पुल्गुदल-गले लगाना।

भावार्थ - गोदा अपने प्रिय विष्णु के दर्शन पाने के लिए वेंकटगिरि आयी है। उनको वहाँ न पाकर उसकी विरह वेदना बढ जाती है। उसका विश्वास है कि श्री विष्णु अपने निवास पर जरूर आएँगे। इसलिए वह काले बादल को दूत बनाकर अपनी मनोकामना को बताने के लिए भेजती है। वह कहती है, ''अपने शरीर पर बिजली को पैदा करने वाले हे काले बादल, भगवान विष्णु को मुझे रोज अपने शरीर से आलिंगन करने की बडी इच्छा है। श्रीदेवी को अपने हृदय पर धरने वाले श्री विष्णु से मेरी इस इच्छा को बताना।''

मतलब यह है कि भगवान विष्णु के हृदय पर श्रीदेवी निवास करती हैं। इसलिए वे आनंद में अपने को भूल गए हैं। इधर उस पर प्रेम करती गोदा की वेदना को उसे सुनाने काले बादल को दूत बनाकर भेजा गया है।

वान् कोण्डु किळर्न्दु एळुन्द मामुगिल्गाळ् वेंगडत्तुत्

तेन् कोण्ड मलर् सिदरत् तिरण्डु एरिप् पोळिवीर्गाळ्

ऊन् कोण्ड वळ् - उगिराल् इरणियनै उजल् इजत्तान्

तान् कोण्ड सरि - वळैगळ् तरुमागिल् साट्टुमिने।।(581)

कठिन शब्दार्थ - वान्-आकाश, मलर्-सुमन, पोळिवीर्-बरसना, वळ् उगिर-मजबूत नाखून, उडल-शरीर, वळैगळ्-चूडियाँ।

भावार्थ - अपने नरसिंह अवतार में भगवान विष्णु ने नुखीले नाखून से धूर्त हिरण्यकश्यप को मारकर लोगों को बचाया था। ऐसे महान रक्षक से प्रेम करती गोदा उसके वियोग में अपना रंग-रूप खोकर कमजोर हो गयी और उसके हाथों से चूडियाँ भी खिसक्कर गिर गयी। अपनी ऐसा दशा को व्यक्त करते हुए वह गाती हैं, ''श्री वेंकटगिरि पर मधु से भरे फूलों को बिखेरने वाली वर्षा को देकर नभ को निगालने की तरह उठनेवाले हे काले बादल अपने पैने नखों से राक्षस हिरण्यकश्यप के शरीर को चीरकर मार दिए भगवान ने मुझसे ली गयी मेरी चूडियों को वापस देने वाला है तो मेरी बुरी दशा के बारे में उसे सुनाना।''

मतलब यह है कि बडे कठोर दिल से राक्षस को मार गिराये भगवान विष्णु उसकी वियोग व्यथा को समझकर उस पर दया करेंगे तो अच्छा होगा।

क्रमशः

श्री वेंकटेश्वर परब्रह्मणे नमः

हिन्दू होने के नाते गर्व कीजिए!

* ललाट पर अपने इच्छानुसार (चंदन, भस्म, नामम्, कुंकुम) तिलक का धारण करें।
* नहाने के बाद निम्न भगवन्नामों में से किसी एक का एक पर्याय में 108 बार जप करें।

श्री वेंकटेशाय नमः।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो नारायणाय।

(गतांक से)

धर्म के सही मार्गदर्शन से युवाओं का अद्भुत विकास

- श्री ज्योतीन्द्र के. अजवालिया, मोबाइल - 9825113636

ब्राह्मण रूपी इन्द्र रोहित को समझाते हैं कि जैसे युगों में सत्ययुग उच्चतम कोटि का कहा जाता है वैसे ही उक्त चौथी अवस्था श्रेष्ठतम स्तर की कही जाएगी। उस युग में समाज सुव्यस्थित होता था और सामाजिक मूल्यों का सर्वत्र सम्मान था। उसके विपरीत कलियुग सबसे घटिया युग कहा गया है क्योंकि इस युग में समाज में स्वार्थपरता सर्वाधिक रहती है और परंपराओं का ह्रास देखने में आता है। उपर्युक्त पहली अवस्था इसी कलियुग के समान निम्न कोटि की होती है।

उक्त प्रकार से संचरण में लगे रोहित के पांच वर्ष व्यतीत हो गये। कथा के अनुसार ब्राह्मण भेषधारी इन्द्र ने अंतिम (पांचवीं) बार फिर से रोहित को संबोधित करते हुए ''चरैवेति'' के महत्व का बखान किया। तदनुसार पुनः भ्रमण पर निकले रोहित को अजीगर्त नामक एक निर्धन ब्राह्मण के दर्शन हुए। उक्त बाह्मण से उसने उनके पुत्र, शुनःशेप, को खरीद लिया ताकि वह बालक वरुणदेव के लिए संपन्न किए जाने वाले यज्ञ में स्वयं के बदले उपयोग कर सके।

नानाश्रान्ताय श्रीरस्तीति रोहित शुश्रुम।

पापो नृषद्वरो जन इन्द्र इच्चरतः सखा चरैवेति।।

(ऐतरेय ब्राह्मण, अध्याय 3, खण्ड 3)

(रोहित, श्रान्ताय नाना श्रीः अस्ति इति शुश्रुम, नृषद्वारः जनः पापः, इन्द्रः इत् चरतः सखा, चर एव इति।)

अर्थ - हे रोहित, परिश्रम से न थकने वाले व्यक्ति को भांति-भांति की श्री यानी वैभव/संपदा प्राप्त होती हैं ऐसा हमने ज्ञानी जनों से सुना है। एक ही स्थान पर निष्क्रिय बैठे रहने वाले विद्वान व्यक्ति तक को लोग तुच्छ मानते हैं। विचरण में लगे जन का इन्द्र यानी ईश्वर साथी होता है। अतः तुम चलते ही रहो (विचरण ही करते रहो, चर एव)।

मेरा सोचना है कि 'श्री' से यहाँ मतलब केवल भौतिक संपदा से नहीं है बल्कि स्थान-स्थान पर विचरण करने से प्राप्त ज्ञान, भांति-भांति के लोगों से प्राप्य अनुभव, उनसे सीखे गए कर्म-संपादन का कौशल आदि से होगा। इंद्र रोहित को बताना चाहते हैं कि सम्मान उसी को मिलता है जो कर्मठ हो, अपने लिए संपदा स्वयं अर्जित करे, दूसरों पर आश्रित न हो। वह स्वयं को अकेला न समझे बल्कि दैव (ईश्वर) पर भरोसा करे।

ब्राह्मण के उपदेशों से प्रभावित होकर रोहित पुनः देश-प्रदेश में विचरण करने लगा।

विचरण का यह सिलसिला चार बार और चलता है। प्रत्येक वर्ष के बाद जब रोहित घर लौटने की सोचता है तो मार्ग में फिर ब्राह्मण रूपधारी इन्द्र मिलते हैं जो पुनः ''चरैवेति'' की सलाह देते हैं। ब्राह्मण भेषधारी इंद्र द्वारा ''चरैवेति'' के उपदेश से प्रेरित होकर रोहित करीब पांच वर्ष तक देश-प्रदेश में विचरण करता रहा। पांचवें वर्ष के अंत पर जब वह घर लौटने को उद्युत हुआ तो मार्ग में उसे ब्राह्मण भेष में पुनः इंद्र देवता मिल गए। उन्होंने पिछली बारों की तरह ''चरैवेति'' का उपदेश दिया और कहा -

चरन् वै मधु विन्दति चरन् स्वादुमुदुम्बरम्।

सूर्यस्य पश्य श्रेमाणं यो न तन्द्रयते चरंश्चरैवेति।।

(ऐतरेय ब्राह्मण, अध्याय 3, खण्ड 3)

(चरन् वै मधु विन्दति, चरन् स्वादुम् उदुम्बरम्, सूर्यस्य पश्य श्रेमाणं यः चरन् न तन्द्रयते, चर एव इति।)

अर्थ - इतस्ततः भ्रमण करते हुए मनुष्य को मधु (शहद) प्राप्त होता है, उसे उदुम्बर सरीखे सुस्वादु फल मिलते हैं। सूर्य की श्रेष्ठता को तो देखो जो विचरणरत रहते हुए आलस्य नहीं करता है। उसी प्रकार तुम भी चलते रहो (चर एव)।

इसी तरह इन्द्रदेव ने रोहित को अद्भुत मार्गदर्शन दिया और रोहित का जीवन धन्य बन गया। ठीक उसी तरह आज के नवयुवकों को अपनी सही राह चुनने के लिए ''चरैवेति'' उपदेश का अनुसरण अवश्य करना चाहिए।

रामायण कालीन समय में प्रभु श्रीराम के दो पुत्र लव और कुश ने भी एसे ही आलस्य त्याग कर सतत परिश्रमी बनकर अपना जीवन धन्य बना लिया।

लव और कुश के बाल्य जीवन और चरैवेति उपदेश का अनुसरण

लव-कुश भगवान विष्णु के सातवें अवतार भगवान श्रीराम व माता लक्ष्मी की अवतार माता सीता के पुत्र थे। उनका जन्म वाल्मीकि आश्रम में हुआ था। तथा शिक्षा भी वही से संपन्न हुई थी। माता सीता के भूमि में समाने के पश्चात उनके पिता श्रीराम के द्वारा उन दोनों को अपनाया गया एवं अयोध्या का राजकुमार

बनाया गया। वे दोनों जुड़वे थे जिसमें लव को अपनी माँ सीता के समान गौर वर्ण का तो कुश को अपने पिता श्रीराम के समान काले वर्ण का बताया जाता है। आज हम आपको लव-कुश का जीवन परिचय देंगे।

लव-कुश का जीवन परिचय

जब श्रीराम माता सीता के साथ चौदह वर्षों के वनवास के पश्चात पुनः अयोध्या आ गए तब उसके कुछ दिनों के पश्चात अयोध्या की प्रजा में माता सीता के चरित्र को लेकर दबी आवाज में बाते की जाने लगी। सभी एक वर्ष तक माता सीता के रावण के महल में रहने पर उनकी पवित्रता पर संदेह कर रहे थे। जब माता सीता को इसका पता चला तो राजधर्म को निभाने व प्रजा को एक उचित संदेश देने के लिए उन्होंने स्वयं वनवास में जाकर रहने का निर्णय लिया। श्रीराम उन्हें छोडने को तैयार नही थे लेकिन माता सीता उन्हें समझाकर वन में चली गयी।

वहाँ जाकर माता सीता वाल्मीकि आश्रम में रहने लगी। जब वे वन में गयी उस समय वह गर्भवती थी इसलिये कुछ महीनों के पश्चात लव-कुश का जन्म हुआ।

लव-कुश की गुरु वाल्मीकि द्वारा शिक्षा

लव-कुश को अपनी माँ का असली नाम नही पता था तथा वे उन्हें वनवती के नाम से ही जानते थे। न ही उन्हें श्रीराम के अपने

पिता होने का ज्ञात था। माता सीता व लव-कुश का असली परिचय केवल महर्षि वाल्मीकि ही जानते थे।

जब लव-कुश बडे होने लगे तब महर्षि वाल्मीकि ने उनकी शिक्षा प्रारंभ कर दी। लव-कुश अपने गुरु व माता के सान्निध्य में रहकर अस्त्र-शस्त्र चलाना सीखते। महर्षि वाल्मीकि ने उन्हें छोटी आयु में ही अस्त्र-शस्त्र विद्या में पारंगत कर दिया तथा समय आने पर उन्हें कई दिव्य अस्त्र भी प्रदान किए।

इसी के साथ उन्होंने दोनों शिष्यों को संगीत विद्या में भी पारंगत किया। उन्होंने अपने द्वारा लिखी गयी रामायण लव-कुश को छंदबद्ध तरीके से रटा दी थी। अब दोनों बालक अस्त्र-शस्त्र विद्या के साथ-साथ संगीत में भी निपुण हो चुके थे।

ब्रह्ममुहूर्त में जागकर आलस्य को त्याग कर दोनों भाई योग एवं अनेक विद्या हांसल की। जंगल में जाकर आश्रम के लिए लकडी काटना, आश्रम की सफाई करना उन का धर्म और कर्म हो गया था। जंगल के वन्य जीवों के साथ भी उन्हें अच्छी दोस्ती हो गई थी, सदा निडर होकर अपने जीवन की राह पर आगे बढ रहे थे। प्रभु श्रीराम की चुनौती स्वीकार करके यज्ञ का घोडा पकडकर श्रीराम के सभी भाईयों के साथ युद्ध भी किया। इस तरह लव और कुश ने अपना जीवन बहुत ही सफल बनाया।

नवयुवकों को संदेश

हरिश्चन्द्र के पुत्र रोहित और प्रभु श्रीराम के पुत्र लव और कुश के माध्यम से नवयुवकों को यही संदेश मिलता है कि नवयुवकों को आलस्य त्याग कर अपनी सफलता को हासिल करने के लिए रुके बिना निरंतर चलते ही रहना यानी निरंतर कर्म के मार्ग पर चलते रहना चाहिए। कर्म से विरत होने से किसी भी प्रकार की सफलता उन्हें प्राप्त नहीं हो सकती है। सतत प्रयास से ही किसी भी कार्य को पूरा किया सकता है।

जय श्रीमन्नारायण!

समाप्त

STATEMENT ABOUT OWNERSHIP AND OTHER PARTICULARS ABOUT

SAPTHAGIRI

(MONTHLY)

FORM IV

See Rule 8

1. Place of Publication	:	TIRUPATI
2. Periodicity of its Publication	:	Monthly
3. Printer's Name	:	Sri P. Ramaraju, M.A.
Whether citizen of India	:	Yes
Address	:	S.O.,T.T.D.Press Compound, K.T.Road, Tirupati.
4. Publisher's Name	:	**Dr. K. Radha Ramana**, M.A.,M.Phil., Ph.D.
Whether citizen of India	:	Yes
Address	:	Chief Editor Office, T.T.D.Press Compound, K.T.Road, Tirupati.
5. Editor's Name	:	**Dr. V.G.Chokkalingam**, M.A., Ph.D.
Whether citizen of India	:	Yes
Address	:	Chief Editor Office, T.T.D.Press Compound, K.T.Road, Tirupati.
6. Name and address of individuals who own the News paper and partners or share holders holding more than one percent of the Total Capital		Tirumala Tirupati Devasthanams

I, K. Radha Ramana, hereby declare that the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.

TIRUPATI
Date : 28-2-2022

(Sd.) Dr. K. Radha Ramana
Signature of the Publisher

तिरुमल तिरुपति देवस्थान
तिरुमल श्री बालाजी का प्लवोत्सव
दि. 13-03-2022 से दि. 17-03-2022 तक

दि. 13-01-2022 को 'वैकुंठ एकादशी' के अवसर पर तिरुमल श्री बालाजी मंदिर को रंग-बिरंग फूलों से सुंदर ढंग से सुसज्जित किया है। इस संदर्भ में स्वर्णरथोत्सव में चार माडावीथियों में श्री मलयप्पस्वामीजी भक्तजनों को दर्शन दिया।

तिरुमल तिरुपति देवस्थान

दि. 27-01-2022 को तिरुपति में 'नमामी गोविंदा पंचगव्य' उत्पत्तियों का बिक्री केंद्र को ति.ति.दे. न्यास-मंडली के अध्यक्ष जी ने शुभारंभ किया है। इस संदर्भ में ति.ति.दे. कार्यनिर्वहणाधिकारी, ति.ति.दे. अतिरिक्त कार्यनिर्वहणाधिकारी, तिरुपति जे.ई.ओ., ति.ति.दे. सी.वी. & एस.ओ., तिरुपति एम.पी., तिरुपति एम.एल.ए. और अन्य उच्चताधिकारीगण ने भाग लिया।

तिरुमल तिरुपति देवस्थान

तिरुपति स्थित ति.ति.दे. श्री वेंकटेश्वर संगीत, नृत्य कॉलेज को दि. 05-01-2022 को कंची कामकोटि पीठाधिपति श्रीश्रीश्री विजयेंद्र सरस्वती स्वामीजी ने संदर्शन करके अनुग्रह भाषण दिया। इस संदर्भ में ति.ति.दे. (तिरुपति) जे.ई.ओ. श्रीमती सदा भार्गवी, आई.ए.एस., कॉलेज के अध्यापक व छात्र और अन्य उच्चताधिकारीगण ने भाग लिया।

तिरुचानूर, श्री पद्मावती देवीजी का मंदिर में सात दिनों का 'नवकुंडात्मक श्रीयागम्' दि. 21-01-2022 से दि. 27-01-2022 तक अत्यंत वैभवोपेत ढंग से संपन्न किया गया है।

दि. 26-01-2022 को 'गणतंत्रदिवस' के अवसर पर ति.ति.दे. प्रशासनिक भवन के प्रांगण में राष्ट्रिय झंडा को फेहराते हुए ति.ति.दे. कार्यनिर्वहणाधिकारी डॉ.के.एस.जवहर रेड्डी, आई.ए.एस.,

गणतंत्रदिवस के अवसर पर भाषण देते हुए ति.ति.दे. कार्यनिर्वहणाधिकारी डॉ.के.एस.जवहर रेड्डी, आई.ए.एस.। मंच पर आसीन हुए ति.ति.दे. अतिरिक्त कार्यनिर्वहणाधिकारी, ति.ति.दे. तिरुपति जे.ई.ओ., ति.ति.दे. मुख्य सुरक्षा व चौकसी अधिकारी और अन्य उच्चताधिकारीगण ने भाग लिया।

इस संदर्भ में पुलिस अधिकारियों से गौरव वंदन को स्वीकारते हुए ति.ति.दे. कार्यनिर्वहणाधिकारी डॉ.के.एस.जवहर रेड्डी, आई.ए.एस.।

(गतांक से)

सियाराम ही उपाय

शरणागति मीमांसा

(षष्टम खण्ड)

सियाराम ही उपेय

मूल लेखक
श्री सीतारामाचार्य स्वामीजी, अयोध्या

प्रेषक
दास कमलकिशोर हि. तापडिया
मोबाइल - 9449517879

116

श्रीमते रामानुजाय नमः

श्री देवराज गुरु कहे, महात्माओं! नवधा भक्ति को किस तरह से उपायान्तरी लोग और किस तरह से शरणागत इसका स्पष्ट निर्णय किया। बहुत थोड़े में भी वर्णन हो सकता था। परन्तु इसको बार-बार अच्छी तरह समझाने की जरूरत है। इसीसे फरक-फरक नवधा भक्ति का नाम घर-घर के भेद बताये हैं। इसी प्रसंग को सुलझाने के लिए और भी कुछ कह रहा हूँ। शास्त्रों में करने के लिए जितने कर्म कहे गये हैं उन सब का एक ही उद्देश्य है पाप छूटना और पुण्य मिलना। परन्तु उन कर्मों के करने में भी उपासक और प्रपन्न की भिन्न रीति है। जैसे सन्ध्यावन्दन उपासक तथा शरणागत दोनों ही करते हैं। परन्तु उपासक पाप छुड़ाने और पुण्य मिलने केलिए करते हैं और शरणागत भगवान की आज्ञा कैंकर्य मानकर किया करते हैं। कारण कि पाप छूटने के लिए और पुण्य मिलने के लिए यदि करें तो उनकी शरणागति टूट जावेगी क्योंकि शरणागतों के लिए तो भगवान आज्ञा कर चुके हैं कि-

''सर्व धर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं ब्रज
अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि माशुचः''

इस श्रीमुख वाणी में शरणागति के भरोसे पर संसार बन्धन से छूटकर मुक्ति चाहने वाले याने भगवान का नित्य कैंकर्य चाहने वाले अधिकारी के प्रति भगवान की आज्ञा है कि स्वरूपानुरूप धर्म को करो। परन्तु उसमें साधन और फल भावना लेकर नहीं। किन्तु भगवान की आज्ञा कैंकर्य मानकर। और हमारी प्राप्ति के लिए हमको उपायत्व करके स्वीकार करो। ऐसा यदि करोगे तो हमारी प्राप्ति में विघ्न करने वाले तुम्हारे पास जितने पाप हैं उन सब से तुमको छुड़ा दूंगा। यदि तुम हमारा अवलम्ब पकड़ लिए तो तुम्हारे आत्मा के कल्याण के बाबत दूसरा पुण्य संपादन करने की तुम्हें जरूरत नहीं है, न पाप छुड़ाने के लिए तुम्हें किसी प्रकार का प्रयत्न करने की आवश्यकता है। भगवान के इस श्रीमुख वचन के अनुसार शरणागत अधिकारी कर्म, धर्मों का पुण्य सम्पादन के लिये और पाप छुड़ाने के लिए कर ही नहीं सकता। क्योंकि उसके पुण्य स्थान में काम करने के लिए तो खुद भगवान हो गये और उसके सारे पापों के छुड़ाने की जिम्मेदारी भगवान पर हो गई। इसलिये जो कुछ स्वरूपानुरूप शरणागत अधिकारी को कर्म, धर्म करना पड़े उसको ऐसा मानना चाहिये कि मैं भगवान का दास हूँ। कर्म, धर्म करना उनकी आज्ञा है। मालिक की आज्ञा पालन करना नौकर का कर्तव्य है। शरणागत उसी को कहते हैं जिसको अपनी रक्षा के लिये अपने पास कुछ न अवलम्ब हो। इसका कारण यह है कि किसी भी कर्म को साधन भावना से मन से भी यदि शरणागत करेगा तो शरणागति टूट जावेगी। उधर साधन योग की शर्ते भी पालन नहीं हो पायेंगी। भगवान उपायान्तर, रक्षकान्तर रहित अधिकारी का उपाय होते हैं और उसी अधिकारी का सब पाप छुड़ाने की प्रतिज्ञा करते हैं। जो लोग खुद ही अपने द्वारा पुण्य सम्पादन करने के लिये, पाप छुड़ाने के लिये कर्म करते हैं उनका भगवान उपाय नहीं बनते हैं, न उनको पापों से छुड़ाने की जिम्मेदारी अपने ऊपर लेते हैं। इससे शरणागतों को चाहिये कि स्वरूपानुरूप कर्म को साधन भावना छोड़कर कैंकर्य भावना से किया करे। जैसे :-

''त्रिविध पाप क्षयार्थ सन्ध्यावन्दन महं करिष्ये।''

तीन प्रकार के पापों को छुड़ाने के लिये मैं सन्ध्यावन्दन करता हूँ। इस प्रकार से संकल्प साधन निष्ठावाले अधिकारी लोग किया करते हैं।

''श्री भगवदाज्ञया श्रीमन्नारायण कैंकर्य रूपं सन्ध्यावन्दन महं करिष्ये'' भगवान की आज्ञा कि सन्ध्यावन्दन अवश्य करना चाहिए। भगवान का मैं दास हूँ उनकी आज्ञा का पालन करना हमारा परम कर्तव्य है। इससे साधन भावना छोड़कर कैंकर्य भावना से मैं सन्ध्यावन्दन करता हूँ भगवान के शरणागत लोग इस तरह से संकल्प किया करते हैं। उसी प्रकार श्राद्ध तर्पन भी दोनों ही अधिकारी करते हैं परन्तु दोनों का संकल्प भिन्न-भन्न है और भावना भी भिन्न-भिन्न है। इसी प्रकार उपासक लोग जब किसी को कुछ द्रव्य, अन्न, वस्त्र, जमीन, गौ वगैरह देने लगते हैं तो (पाप क्षयार्थ पुण्य सम्पादनार्थ इदं दानमहं करिष्ये) पाप छूटने के लिये, पुण्य मिलने के लिये इस दान को मैं कर रहा हूँ। इस प्रकार से अहंकार गर्भित संकल्प किया करते हैं। और भगवान के शरणागत लोग यह समझे रहते हैं कि भगवान का तो द्रव्य है और समय-समय पर लेने वाले अधिकारियों को देने के लिए प्रभु की आज्ञा है और उनकी आज्ञा पालन करना हमारा कर्त्तव्य है। भगवान की चीज भगवान की आज्ञा से भगवान में, भागवतों में, गुरुवर्यों में तथा गरीबों में उपयोग करना यह हमारा कर्तव्य है। जिसकी यह वस्तु है वह भगवान इसके फल के अधिकारी हैं। इससे पाप छूटना, पुण्य सम्पादन होना इस बात की स्वप्न में भी हमें भावना नहीं है। हमारा सब पाप छुड़ाने वाले और हमारा उपाय तो श्री भगवान हैं। ऐसा शुद्ध विचार करते हुए किसी भी चीज का दान किया करते हैं। शरणागत लोग तो कुछ भी देते समय प्रायः संकल्प करते ही नहीं हैं। यदि कभी करें तो (भगवदीयं वस्तु भगवदाज्ञया भगवच्चेतनेभ्यः आज्ञा कैंकर्य रूपं दातुँ संकल्प महं कुर्वे) इस संकल्प का भाव पहले ही कह चुके हैं। इस प्रकार से विचार करके किसी को कुछ देने से शरणागत अधिकारी को पाप-पुण्य कुछ भी असर नहीं किया करता है। उपायान्तरी लोग कुछ भी देने के लिए पुण्य तिथि की अपेक्षा किया करते हैं। द्वादशी तिथि, अमावास्या तिथि, संक्रान्ति का दिन, ग्रहण का दिन, कुम्भ, अर्द्धकुम्भी का दिन, व्यतीपात, सोमवती आदि तिथियों को ढूँढ़ते रहते हैं। क्योंकि पुण्य सम्पादन करना और पाप छुड़ाना वे अपनी जिम्मेदारी पर लिए रहते हैं। ये तो समझते नहीं हैं कि भगवत की वस्तु अपनी मानकर खास निमित्त तिथियों को ढूँढ़कर अपने लिए पुण्य सम्पादन के निमित्त से देने से कितना भारी अनर्थ होता है। और भगवान के शरणागत को साधन मानके तो कुछ करना नहीं रहता, न फल भावना की आवश्यकता रहती है। उन्हें सब कैंकर्य की ही भावना से करना है। इसलिए वह प्रायः करके कभी भी पुण्य तिथि की अपेक्षा नहीं करते हैं। चाहे जब कैंकर्य भावना से दान दे दिया करते हैं। कभी निमित्त तिथियों में भी कुछ देने का काम पड़ता है तो उस वक्त वह पुण्य मिलने के निमित्त और पाप छुड़ाने के निमित्त कुछ नहीं करते। क्योंकि वह सारी चीजों को भगवान की मानते हैं। यद्यपि शरणागत लोग स्वरूपानुरूप कुछ भी कर्म करने में, स्वरूपानुरूप कुछ भी देने में अहंकार न आजावे, साधन भावना तथा फलाभिसन्धि मन में न आवे इस बात से बहुत सम्हले रहते हैं तथापि निमित्त तिथियों का तथा पुण्यकाल का नाम श्रवण कर ग्रहण समय, संक्रान्ति समय और भी पर्वकाल तथा खाख खास शास्त्रोक्त तप के स्थान आदि से बहुत भयभीत होते हैं। क्योंकि शास्त्रों में कहा है कि इन पूर्वोक्त पर्वों में जप, तप, स्नान, ध्यान, दान आदि करने से बहुत ज्यादा पुण्य मिलता है और ऐसे ही पर्वों में ज्यादातर लाखों लोग पुण्य नदियों के निकट तथा तीर्थ स्थानों में स्नान, ध्यान, धर्म दानादि करने के लिए इकट्ठे हुआ करते हैं। यह मन अनादि से उपायान्तारों में पड़ के आत्मा के स्वरूप को प्रायः नष्ट ही कर चुका हैं। यह तो किसी तरह गुरु भगवान के निर्हेतुक अनुग्रह से उपायान्तर त्याग पूर्वक भगवान श्रीपति को श्रीचरणों में शरणागति कर पाया है। इन पर्वों के योग से अनेकों को उपायान्तर में प्रवृत्त देखकर ऐसा न कहीं मन में आजाय कि महापर्व का दिन है आज कुछ करने से ज्यादा पुण्य होता है। पुण्य सम्पादन और पाप छुड़ाने के लिए कुछ जप, स्नान वगैरह में प्रवृत्त हो जाऊँ। साधन भावना हटाकर भगवान की आज्ञा पालने के निमित्त तो स्नान, ध्यान, जप, अनुसन्धान करने में कुछ हानि नहीं है। परन्तु तोभी पुण्य काल में शरणागत महात्मा तो भयभीत होते ही हैं।

क्रमशः

श्री कपिलेश्वर स्वामी मंदिर, तिरुपति

- डॉ.बी.के.माधवी, मोबाइल - 9441646045.

''विश्वनाथं विश्ववंद्यं निखिलभयहरं

पंच वत्रं त्रिनेत्रं''

सकलजीवों को आत्मपरायणत्व और सर्वविध कल्याण शक्तियों को प्रसादित करनेवाला जीवरक्षक शशांकशेखर, महेश्वर, शंकर, शंभु, रुद्र, महादेव, नीलकंठ... ऐसे कई नामों से सर्वेश्वर की आराधना करते हैं भक्तजन। ''सर्वं शिवमय जगत्''। सकल सृष्टि ईश्वरमयं के रूप में शोभित हो रही है। ऐसे विश्वेश्वर सृष्टि के प्रतीक के रूप में, 'लिंगाकृति' के रूप में तेजोवान है। कई नामधेयों से विराजित ईश्वर कपिलेश्वर स्वामी जी के रूप में विराजित क्षेत्र कपिलतीर्थ है। यह क्षेत्र आंध्रप्रदेश में चित्तूर जिला, तिरुपति नगर में है।

किसके द्वारा सृष्टिचक्र प्रकृति चलती है, कौन सकल जीवराशियों को चोदक शक्ति के रूप में व्यवहृत कर रहे हैं। उस दैव ही विश्वनाथ है। ऐसे विश्वंभर कपिलेश्वर के रूप में प्रकृति रमणीयता के नेपद्य में सुशोभित है।

तिरुमल श्री वेंकटेश्वर स्वामी के दर्शन के लिए निकलनेवाले भक्तजन कपिलतीर्थ में श्री कपिलेश्वर स्वामी का दर्शन भी करते हैं।

श्री वेंकटाचलपति-पद्मावतीदेवी परिणय का वीक्षण करके उस जगत्कल्याण को जयप्रद बनाकर, बाकी सब देवतागण अपने-अपने स्थान पहुँच गये। कपिलमुनि की प्रार्थना के फलस्वरूप परमेश्वर, पार्वती सहित कपिलाश्रम पहुँचकर महर्षि का अनुग्रह किया। उनकी अभ्यर्थना से दिव्य तीर्थ में कपिलेश्वर के रूप में प्रकटित हुआ। शेषाचल पर्वत प्रांत में कपिलेश्वर स्वामीजी की सन्निधि एकैक प्राचीन शिवालय के रूप में प्रख्यात है।

''कोटिजन्मार्जितै पुण्यैः शिवभक्ति प्रजायते'' वेदोक्ति है कि- करोड जन्मों में किये शिव पूजा के फलस्वरूप ही शिवभक्ति पैदा होती है। केवल मानव ही नहीं जीव, जंतु भी इसका प्रमाण है। इस विशेष फलस्वरूप को पाने के लिए ही कपिलमहर्षि के द्वारा कपिलेश्वर स्वामीजी भूलोक में सुप्रतिष्ठित हुए। श्री पद्मावती देवी अपने परिणय के शुभ समय में यहाँ की माता गौरी देवी की आराधना करके सौभाग्य स्थिति को पायी है। इस कपिलतीर्थ में स्नान करने से देश के पवित्र नदी-नदों में स्नान करने का पुण्य फल मिलता है। यह प्रतीति है कि- ''मुल्लोक के सकल तीर्थ 'माघ पूर्णिमा' के दिन दोपहर चार घंटों तक कपिलतीर्थ में रुकती है उस समय पुष्करिणी में स्नान करके दान करेंगे तो वह मेरु पर्वत के समान होता है।''

भारतदेश में काशी, गया, प्रयाग के जैसे विशिष्टता केवल एक कपिलतीर्थ को ही मिला है। पुराणों के द्वारा विदित होता है कि- ''सप्तगिरि पर लगभग 70 तीर्थराज सुशोभित है। तीर्थ का मतलब है 'पवित्र धाम'। इन सारे तीर्थों का पानी कपिलतीर्थ में मिलती है। देवभूमि के रूप में विख्यात शेषाचल पर्वतों में प्रवाहित होकर वन, गिरि, तरुओं को पार करके जलराशियों से सुशोभित होकर कपिलतीर्थ विख्यात हो रही है। जंगलों से औषधगुणों से वृक्षों के नीचे मार्ग से प्रवाहित होते हुए कपिलतीर्थ में मिलनेवाले इन जलराशियों में भक्तजन स्नान करने से कई शारीरिक, मानसिक बीमारियों को दूर कर सकता है।

सारे विद्याओं में वेद महान है। सारे वेदों में संहितकांड में नमक-चमक मंत्रों से युक्त रुद्रं महान है। उसमें भी ''ॐ नमः शिवाय'' नामक पंचाक्षरि मंत्र अत्यंत महान है। शास्त्र का कथन है कि- ''पंचाक्षरी में ''शिव'' नामक दो अक्षर अत्यंत महान है। शिव को शंकर भी कहते हैं। ''शंकरोति इति शंकरः'' ऐसी व्युत्पत्ति है। यानि कि शमन या तो शांति देनेवाला है।

ऐसे शांति देनेवाले शिव का आविर्भाव, शैवक्षेत्रों का आविर्भाव देश भर में यत्र-तत्र हुआ है। ऐसे मंदिरों में तिरुपति का ''कपिलतीर्थ'' भी एक है।

शेषाचल पर्वतों में स्थित कई पुण्य तीर्थों से झरित पवित्र जलधाराओं से कपिलतीर्थ नामक सरोवर बना है। पर्वतमूल में स्थित प्राचीन पुण्यतीर्थ ही ''कपिलतीर्थ'' है। इसी दिव्यतीर्थ को ही ''सुदर्शन चक्रत्ताल्वार तीर्थ'', ''चक्रत्ताल्वार तीर्थ'', ''आल्वारतीर्थ'' जैसे नाम भी हैं।

युग-युगों में प्रसिद्ध देव, गंधर्व, यक्ष, किन्नरादियों से ही नहीं बल्कि महर्षियों से, पंडित-पामर सारे मानवों के द्वारा भी आराधना करनेवाले महामहिमान्वित शिवलिंग ही श्री कपिलेश्वरलिंग है। अच्युतदेवराय के काल में... शासनों के द्वारा विदित होता है कि- विजयनगर चक्रवर्ति अच्युतदेवराय ने तीन बार तिरुमल यात्रा किया।

वास्तव में वैष्णवमताभिमानि अच्युतराय श्री वेंकटेश्वरस्वामी का प्रिय भक्त होने के कारण इस क्षेत्र का

नाम ''कपिलतीर्थ'' का नाम के स्थान पर ''सुदर्शनचर्कतीर्थ'' नाम से प्रसिद्धि बनाया। इतना ही नहीं इस पुष्करिणी के चार कोनों में ''तिरुवालिक्कल'' रूप से बुलाये जाने वाले चार ''सुदर्शनचक्रशिला'' यंत्रों को प्रतिष्ठित करके इस तीर्थ को ''चक्रत्ताल्वार तीर्थ'' और ''आल्वारतीर्थ'' जैसे सार्थक नामधेयों से पुकारा गया।

ऐसे इतनी पुराण प्रसिद्ध पाये गये इस क्षेत्र का नाम ''कपिलतीर्थ'' कैसे आया? कपिल कौन है? उनके नाम से यहाँ शिवलिंग का आविर्भूत किस लिए हुआ? कैसे हुआ? इस तीर्थक्षेत्र की कोई महिमाएँ हैं क्या? इन सब विषयों के बारे में पता लगाएँगे।

श्री महाविष्णु ने ही कपिल के रूप में जन्म हुआ है

मनुचक्रवर्ति ने अपनी दूसरी पुत्री देवाहुति को कर्दम प्रजापति से विवाह करवाया था। ब्रह्मदेव के आदेश से कर्दमप्रजापति ने अपनी पत्नी से मिलकर सरस्वती नदी के तट पर एक आश्रम बनाकर श्री महाविष्णु के लिए हजारों साल तप किया। श्रीहरि के अनुग्रह से उनको साक्षात् श्री महाविष्णु ही ''कपिल'' नामक पुत्र के रूप में जन्में।

कपिल को आग्रह आया

कपिलमहर्षि ने पाताललोक में एक आश्रम बनवाकर वह एक अद्भुत शिवलिंग को प्रतिष्ठित कर, शिव की आराधना करते हुए तीव्र तप में लीन हुआ।

उस समय में सगर नामक चक्रवर्ति ने अश्वमेधयाग करने के लिए घोडे को छोडा। इंद्र ने पदवी के डर से उस यज्ञ का भंग करने के उद्देश्य से उस घोडे को चोरी करके पाताललोक में तप करते हुए कपिलमहर्षि के आश्रम में एक पेड से बाँधकर चला गया। सगर के पुत्र उस घोडे को ढूँढते हुए अंत में पाताल पहुँचकर वहाँ कपिलाश्रम में रहे अश्व को देखा। उन्होंने सोचा कि कपिले ने ही उसे चोरी किया है यही उद्धेश्य से कपिलमहर्षि की हत्या करने के लिए तैयार हुए। इतने में कपिलमहर्षि ने आँखे खोलकर क्रोध से देखा तो उनके तीखे नजरों से सगरपुत्र भस्म हो गये।

यज्ञ रुकना ही नहीं बल्कि अपने पुत्रों के दुर्मरण से चिंतित होकर सगर पुत्रशोक से ही मर गया। उसके कई दिनों के बाद सगर के प्रपौत्र अंशुमंत ने अपने पूर्वजों के द्वारा किये गये भूल को क्षमा करने के लिए कपिलमहर्षि से प्रार्थना करके, अश्व को ले जाकर अश्वमेथयाग की पूरा किया।

भगीरथ ने गंगा को बुलवाया

लेकिन अपने पूर्वज सगरपुत्रों को ऊर्ध्वलोक पहुँचाने में असफल हुआ। कई दिनों के बाद अंशुमंत का पौत्र, दिलीप का पुत्र भगीरथ तीव्र तप करके परमेश्वर के जटाजूट में रही गंगा को पृथ्वी पर अवतरित करके, वही गंगा को

पाताललोक ले जाकर सगरपुत्रों के भस्मराशियों पर प्रवाहित किया। इसके द्वारा उन सबको उत्तम लोकों की प्राप्ति हुई।

ऐसे अवतरित गंगा भूलोक में 'भागीरथि' के रूप में और पाताललोक में ''भोगवति'' के रूप में प्रसिद्धि पायी है।

शिवलिंग बढाने से कैसे रोकना?

उस पाताललोक में 'भोगवति' के रूप में विख्यात, गंगानदी के तट पर स्थित कपिलमुनि अपने आश्रम में एक शिवलिंग की पूजा कर रहा था। उस महाशिवलिंग आश्चर्यकर तेजों से प्रकाशित होना ही नहीं दिन-ब-दिन ऊर्द्धमुख रूप से बढती हुई पृथ्वी को चीरकर अंत में वेंकटाचल क्षेत्रमूल में स्वयंभू के रूप में आविर्भूति हुई है। फिर भी बढने वाले अद्भुत उस शिवलिंग को बढने से रोकने के लिए संकल्पित श्री महाविष्णु ने गोपाल के रूप में, ब्रह्मदेव कपिलधेनु के रूप में बदलकर उस शिवलिंग पर अनंत क्षीरधाराओं को बरसाकर, अभिषेक करते हुए

दोनों ने कई तरह की प्रार्थनाएँ की हैं। उससे पाताललोक से जोर से बढनेवाले उस महाशिवलिंग, वेंकटाद्रि पर्वतमूल में स्थित गुफाओं में स्वयंभू के रूप में खडा हुआ है।

पाताललोक से पृथ्वी को चीर कर आये उस शिवलिंग के साथ, बगल में रही 'भोगवती' गंगा भी निकल आयी। सारे देवतागण अभिषेक करके पूजाओं का निर्वहण किया। कपिलमहर्षि के द्वारा पूजित होने के कारण शिव को कपिलेश्वर और ''कपिलेश्वरलिंग'' नामक प्रसिद्ध नाम आया। भोगवती गंगा 'कपलितीर्थ' नाम से परमपावन तीर्थराज के रूप में प्रसिद्ध होकर, इस तीर्थ में स्नान करने वालों को घोर पापों से विमुक्ति करती हुई पुनीत बना रही है। श्री कपिलेश्वर स्वामी के मंदिर में प्रत्येक मंदिर में कामाक्षी देवी भक्ताभीष्ट वरप्रदायिनी के रूप में दर्शन देती है। प्राकृतिक रमणीयता से आध्यात्मिक प्राभवों से सुशोभित इस क्षेत्र में कई उपालय है। कपिलतीर्थ क्षेत्र की ख्याति, वैभवों को इन आलयों के द्वारा विदित होता है। इस तीर्थ के क्षेत्रपालक के रूप में अभयहस्त आंजनेयस्वामी (हनुमान) व्यवहृत कर रहा है। इस कपिलतीर्थ क्षेत्र के स्वागत द्वार समक्ष में अभयहस्त आंजनेयस्वामी का मंदिर है। संपूर्ण रजत कवचालंकृत रूप से स्वामी अभयहस्त मुद्रा से प्रकटित होता है।

''अभहस्तदायकं आनंदप्रदायकं
अंजनानंदनंवीरं जानकीशोकनाशनं''

कहते हुए भक्तजन स्वामी की प्रार्थना करते हैं। इस क्षेत्र में प्रवेश करके पवित्र स्नान करने के तदुपरांत भक्तजन पहली पूजा इस अभयहस्त आंजनेय को समर्पित करते हैं। इसी आलय के समक्ष में श्रीवैष्णवमतोद्धारक श्री नम्माल्वार का मंदिर है। विष्णु नाम स्मरण से विष्णुलीला विन्यासों को दश-दिशाओं में प्रचार किये गये धन्यात्मा श्री नम्माल्वार है। ऊर्ध्वपुंड्रों से नम्माल्वार की प्रतिमा सजीवकला से दृष्टिगत होती है।

कपिलतीर्थ के क्षेत्र में रहे और एक उपालय श्री रुक्मिणी, सत्यभामा सहित श्री वेणुगोपाल स्वामी का मंदिर

है। सुब्रह्मण्य स्वामी के मंदिर में श्रीवल्ली, देवसेना समेता सुब्रह्मण्यस्वामी, विनायक, कालभैरव, श्री दक्षिणामूर्ति और अन्य शिव परिवार देवतामूर्तियों का दर्शन भक्तजन करते है।

इस क्षेत्र के वृक्ष समच्छय के नीचे जुड नागशिला प्रतिमाएँ विराजमान है। इन मूर्तियों को भक्तजन गोक्षीर से अभिषिक्त करते हैं। कई पुष्पों से अलंकृत करते हैं दीप जलाते हैं। संतान नहीं होने वाली महिलाएँ यहाँ विशेष पूजाएँ करते हैं। इस पेड के नीचे नाग प्रतिमाओं की पूजा करेंगे तो बच्चा पैदा होने के संकल्प से वे यहाँ पूजा करते हैं। महिला भक्त इस वृक्ष समुदाय के नीचे रही पार्वती माता को मंगलगौरी के रूप में पूजा करते हैं।

कपिलतीर्थ में और दो शिवलिंग है। वे कोटिलिंगेश्वर स्वामी, काशी विश्वेश्वर स्वामी सन्निधि, कपिलेश्वर, कोटिलिंगेश्वर, काशी विश्वेश्वर एक ही आंगन में विराजित होने के कारण इस क्षेत्र 'त्रिलिंग क्षेत्र' के रूप में विख्यात हुआ है। कपिलेश्वरजी के दर्शन करने के बाद भक्तजन इस जुडुआ शिवलिंगों का दर्शन करते हैं। अभिषेकादि पूजाओं का निर्वहण करते हैं।

''अष्टमूर्त्यात्मना विश्वमधिष्टाया स्थितं शिवं'' अष्टमूर्तियों के रूप में शिव इस जगत्पीठ पर अधिष्ठित हुआ है। ऐसे महेश्वर का कई नाम है। कोटेश्वर के रूप में, विश्वेश्वर के रूप में इस क्षेत्र में शोभित हो रहा है। विश्वेश्वर स्वामी के रूप में कवचालंकृत पानव पर रत्नखचित त्रिपुंड्रों को धारण कर ज्योति रूप से स्वामी कांतिरूप से प्रकटित हो रहा है।

इस मंदिर के बगल में ही कोटेश्वर आलय है। एक ही शिवलिंग पर कई लिंगाकृतियाँ सूक्ष्यस्थायी में विराजमान है।

''सकलचराचरं आच्छादनीयं परमात्माना'' - के जैसे इस सारी दुनिया ईश्वर से भर गया है। इस ईश्वर लिंग कई लिंगाकृतियों से दृष्टिगत होती है। इसी तरह के शिवलिंग का अभिषेकादि अर्चना करेंगे तो करोडों पुण्यफल की सिद्धि प्राप्त होती है। कवचालंकृत पानवट्ट पर कोटेश्वर पंचफणियुक्त के रूप में दर्शन देते हैं।

आलय के आग्नेय के कोने में नवग्रह मंदिर भी है। यहाँ के आमले वृक्ष के नीचे कार्तिकमास में महिलाएँ दीपों को प्रज्वलित कर पूजा करते हैं। इस पेड के नीचे वनभोजन भी करती हैं। पुष्करिणी में कार्तिकदीपों को छोडते हैं। इस कपिलतीर्थ कार्तिकमास में हर दिन भक्तजनों से कोलाहल रहती है। इस मास पर्यंत विशेषोत्सवों का निर्वहण होता है। महाशिवरात्रि के संदर्भ में शिव के प्रिय विशेष उत्सवों का झुलूस निकालते है। तिरुमल तिरुपति देवस्थान यह उत्सव को वैभवोपेत पूर्ण मानता हैं। देवस्थान के तत्वावधान में तेप्प तिरुनाल्लु का निर्वहण करते है। यहाँ महाशिवरात्रि के पहले किये जाने वाले ब्रह्मोत्सव, दिसंबर महीने में आनेवाले प्लवोत्सव भक्तजनों को अलौकिक आनंद में डुबो देती है। कार्तिकमास में आनेवाले कार्तिकदीप के पर्वदिन में यहाँ के पर्वतपर कार्तिकज्योति का साक्षात्कार होता है। सारे भक्तजन कपिलतीर्थ की ओर देखकर दीप नमस्कार करते हैं। दुनिया के प्रसिद्ध पुण्यक्षेत्र तिरुमल-तिरुपति में श्री वेंकटेश्वर स्वामी के मंदिर के साथ श्री गोविंदराजस्वामी, श्री कोदंडरामस्वामी के मंदिर हैं। महान वैष्णव क्षेत्रों के बीच तिरुपति में एक ही शैव क्षेत्र कपिलतीर्थ है।

विश्वेश्वर विभूतियों में प्रकृति भी एक है। उसमें तीर्थों का माहात्म्य भी है। यही विशेषता कपिलतीर्थ का भी है। प्राकृतिक सौंदर्य की शोभा से आध्यात्मिक दिव्य प्रभाओं से देवताएँ, महर्षिगण, यक्ष, किन्नेर, किंपुरुषों का निवसित दिव्यस्थल ही कपिलतीर्थ है। इस कारण यहाँ अत्यंत आध्यात्मिक अनुरक्ति को पैदा करती है।

''वृश्यमै अपारकारणाद्भूतिः''

श्री प्रपन्नामृतम्

(३०वाँ अध्याय)

मूल लेखक - श्री स्वामी रामनारायणाचार्यजी

प्रेषक - श्री रघुनाथदास रान्दड

मोबाइल - 9900926773

(गतांक से)

यतिराज का श्री शैलपूर्णाचार्य स्वामीजी से रामायण का अर्थ सुनना

यतीन्द्र श्री रामानुजाचार्य ने वेंकटाचल को प्रणाम करके वेंकटाचल पर चढ़ना प्रारम्भ किया। यतिराज का आगमन सुनाकर श्री शैलपूर्णाचार्य स्वामीजी स्वयं अगवानी करके उन्हें वेंकटेश तीर्थ शठकोप इत्यादि प्रदान किये। फिर श्री शैलपूर्णाचार्य स्वामीजी को साष्टांग प्रणिपात करके श्री यतिराज बोले-श्रीमन्! आप मुझे तीर्थ प्रसाद देने के लिए स्वयं कष्ट करके इतनी दूर क्यों आये किसी बालक से भिजवा देना चाहिये था, श्री रामानुजाचार्य की वाणी सुनकर श्री शैलपूर्णाचार्य स्वामीजी बोले- ''यतिराज! मुझे छोड़कर यहाँ कोई दूसरा बालक नहीं है।'' इसके बाद सभी वैष्णवों के साथ श्री रामानुजाचार्य अनेक मण्डपों और गोपुरों को पार करके आगे बढ़े। सोपान रहित मार्ग पर आते हुए श्री रामानुजाचार्य को जानकर उस पर्वत के निवासी एकान्ती वैष्णव एवं सन्यासियों ने उनके सन्निकट में आकर उनका सम्मान किया तथा उन सबों के साथ यतिराज ने वृषाद्रि पर आकर अपने नित्य कृत्यों को करके क्रमशः चतुर्थ बीथी में पहुँचकर प्रदक्षिणा की और वहाँ के विविध उद्यानों, मंडपों आदि का विस्मित होकर दर्शन किया। वहाँ के विशाल वृक्षों तथा नाना प्रकार के पशु-पक्षियों को नित्यसूरि मानकर उन्होंने भगवान वराह का दर्शन किया।

कुलशेखर सोपान को पार करने के बाद बलिपीठ सोपानों को प्रणाम करके तथा यामुनाचार्य पुष्प मंडप की यतिराज प्रदक्षिणा करके धनुर्मास के शुक्लपक्ष की द्वादशी तिथि को जबकि वहाँ सभी तीर्थ आते हैं, ऐसी महात्म्यमयी स्वामिपुष्करिणी का तीर्थ लेकर भगवान वेंकटेश के मंदिर में प्रवेश किया। शिष्यों के साथ यज्ञशाला, श्रीमणिमण्डप एवं विष्वक्सेन प्रभृति को साष्टांग प्रणाम करके श्री रामानुजाचार्य आनंदनिलय नामक विमान का दर्शन करके श्री वेंकटेश भगवान का दर्शन करके तीर्थ तुलसी शठकोप ग्रहण किया। इसके बाद पृथ्वी पर इस वैकुण्ठ नगरी के पशु-पक्षियों एवं लोगों की स्नान की यह बेला है अतः मुझे यहाँ सम्प्रति नहीं रहना चाहिये, यह सोचकर यतिराज वेंकटाचल से अवरोहण करने के लिए उद्यत ही थे कि आकर श्री शैलपूर्णाचार्य स्वामीजी बोले कि इस दिव्यदेश में तीन दिन तक निवास करना चाहिये। श्री शैलपूर्णाचार्य

स्वामीजी के आदेशानुसार तीन दिन तक यतिराज वहाँ निराहार निवास करके भगवान वेंकटेश की प्रार्थना भट्टनाथ सूरिकृत गाथाओं से की। इससे प्रसन्न होकर भगवान वेंकटेश ने उन्हें अपने अर्चकों से तीर्थ शठकोपादि प्रदान कराकर प्रसन्न होकर बोले-यतिराज! आप तथा आपके (पारस्परिक) सम्बन्धियों को मैं उभयविभूति प्रदान करता हूँ। भगवान की इस वाणी को सुनकर प्रसन्न यतिराज ने वेंकटाचल से उतरकर तिरुपति क्षेत्र में श्री शैलपूर्णाचार्य स्वामीजी के यहाँ प्रसाद ग्रहण किया (भोजन किया) और श्री शैलपूर्णाचार्य स्वामीजी की सन्निधि में वाल्मीकीय रामायण का अर्थ श्रवण करते हुए एक वर्ष तक निवास किया।

वहाँ रहते हुए उन्होंने देखा कि गोविन्दाचार्य श्री शैलपूर्णाचार्य स्वामीजी की शैय्या लगाकर पहले उस पर सो लेते हैं और उनका यह दोष समझकर उन्होंने यह बात श्री शैलपूर्णाचार्य स्वामीजी से कही। तदनन्तर श्री शैलपूर्णाचार्य स्वामीजी ने श्री गोविन्दाचार्यजी को बुलाकर कहा-तुम जानते हो कि गुरु की शय्या पर सोने का क्या फल होता है। इसका उत्तर देते हुए श्री गोविन्दाचार्य स्वामीजी बोले कि- नरक। किन्तु मेरे द्वारा लगाई गई शैय्या पर बिना किसी क्लेश के गुरुदेव को रात्रि भर अच्छी तरह से नींद आये और मुझे भले नरक ही हो तो कोई हानि नहीं। श्री गोविन्दाचार्य की यह भक्ति भरी भावना देखकर यतिराज अत्यन्त प्रसन्न हुए। एक दिन श्री रामानुजाचार्य और श्री पूर्णाचार्य ने वन में जाकर देखा कि- श्री गोविन्द साँप के मुँह में हाथ डालकर फिर स्नान करके अपने गुरुदेव का कैंकर्य करने जा रहे है। इस पर उन्होंने गोविन्दाचार्य से साँप को मुँह में हाथ डालने का कारण पूछा तो श्री गोविन्दाचार्यजी ने बताया कि साँप की जीभ में काँटा गढ़ गया था। इनकी इस महती दया को देखकर श्री रामानुजाचार्य अत्यन्त प्रभावित हुए। सम्पूर्ण रामायण का अठारह प्रकार से भावार्थ सुन लेने के बाद उन्होंने श्री शैलपूर्णाचार्य स्वामी के यहाँ से श्रीरंगम चलते समय श्री गोविन्दाचार्यजी को माँग लिया और वहाँ से घटिकाचल पर आकर भगवान नृसिंह का मंगलाशासन किया। तदनन्तर गृध्रसर के किनारे विजयराघव भगवान का मंगलाशासन करके वे श्री कांचीपूर्ण स्वामीजी की सन्निधि में आये।

एक बार गुरु के दर्शन के अभाव में श्री गोविन्दाचार्यजी के सूखे हुए अंगों को देखकर श्री यतिराज बोले कि आप श्री शैलपूर्णाचार्य स्वामीजी का दर्शन कर आयें। तदनन्तर शीघ्र ही श्री गोविन्दाचार्य श्री शैलपूर्णाचार्य स्वामीजी के दर्शनार्थ उनके यहाँ चले गये। वहाँ वैष्णवों से यह सुनकर कि गोविन्द आये हैं, श्री शैलपूर्णाचार्य स्वामीजी क्रुद्ध होकर बोले कि- कह दो कि वह यहाँ से चला जाय। श्री शैलपूर्णाचार्यजी को क्रुद्ध देखकर उनकी पत्नी बोली- श्रीमान्! आपको अपने आये हुये शिष्य गोविन्द को तीर्थ, तुलसी, शठकोप प्रदान तो करना ही चाहिये? पत्नी की वाणी सुनकर श्री शैलपूर्णाचार्य स्वामीजी ने पूछा कि-बेची हुई गाय के भाग आने पर उस कोई घास देता है? यह सुनकर वहाँ से निराश लौटकर आये हुए गोविन्दाचार्य जी का वृत्तान्त सुनकर श्री रामानुजाचार्य श्री शैलपूर्णाचार्य स्वामीजी के वात्सल्य गुण तथा सर्वज्ञता की प्रशंसा करने लगे। इसके बाद वे श्री गोविन्दाचार्यजी के साथ अष्टसहस्र नामक ग्राम में जाकर वहाँ यज्ञेश से सत्कृत होकर फिर शीघ्र ही श्रीरंगम चले आये। उनको आया देखकर वहाँ के निवासियों ने उनका स्वागत-सत्कार किया और फिर भगवान रंगनाथ ने भी उन्हें अर्चकों से तीर्थ, तुलसी श्री शठकोप दिलवाकर पूछा कि क्या वे वेंकटाचल से सकुशल लौट आये? उसके बाद श्री रामानुजाचार्य शिष्यों के साथ शीघ्र ही अपने मठ में लौट आये।

।।श्रीप्रपन्नामृत का ३०वाँ अध्याय समाप्त हुआ।।

क्रमशः

(गतांक से)

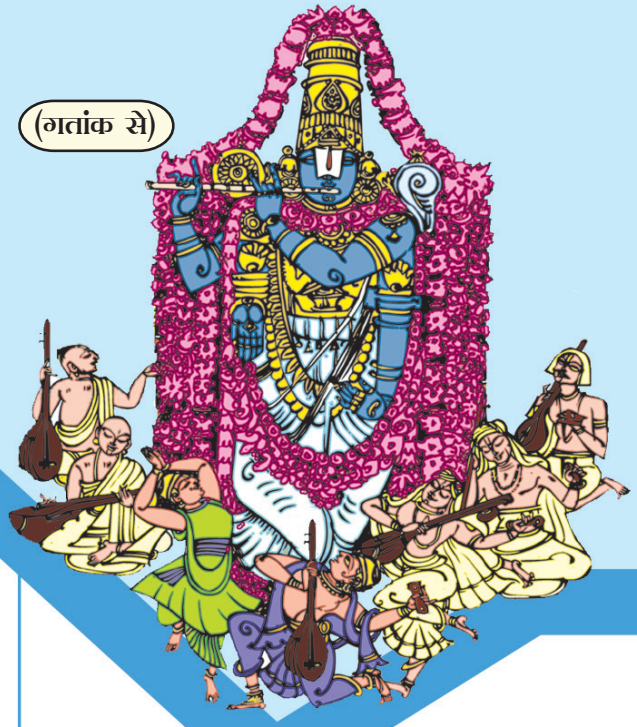

हरिदास वाङ्मय में श्रीवेंकटाचलाधीश

तेलुगु मूल - श्री एस.नागराजाचार्युलु
हिन्दी अनुवाद - डॉ.एम.आर.राजेश्वरी
मोबाइल - 9490924618

''कूगिदरु ध्वनि केलदे। शिरि।
बागिदरु दयबारदे
भोगि शयन भुवनाधि पते निन्न।
आगमन वेंदिगे आगुवदुप्रभो।।''

हे भगवान! मैं चीख-चीखकर बुला रहा हूँ, क्या तुझतक मेरी आवाज नहीं पहुँच रही है? हे भोगीन्द्र शयन! तेरा दर्शन मुझे कब मिलेगा? तुम भक्तों के वश में रहते हो। ऐसे में तुम मुझ पर कृपा न करके इधर-उधर क्या देख रहे हो? मैं तुम्हारा भक्त हूँ, मुझ पर कटाक्ष करो हे स्वामी!

श्रीनिवास भगवान का तुरंत दर्शन नहीं हो पाने के कारण, विजयदास जी बहुत उतावले हो उठते हैं। वे वहाँ के स्वामी तथा उनका यशोगान इस रूप में करते हैं -

''निन्न दरुशनके बंदव नल्लवो।
पुण्यवंतर चरण नोडलु ना बंदे।।''

मैं तेरे दर्शन के लिए नहीं आया। जो भाग्यवान भक्त तेरे शरण में आते हैं, उनके चरणों का दर्शन करने मैं यहाँ आया हूँ। गीतकार के कहने का उद्देश्य, वे वहाँ के मृग, तरु यानी प्रकृति के दर्शनार्थ आये हुए हैं। वे कहते हैं - जब मन चाहा चीज हाथ नहीं लगती या देखने को नहीं मिलती, तब मन का उतावला होना सहज ही में ही जाता है।

श्री विजयदास के हृदय में श्रीनिवास के दिव्यमंगल मूर्ति पर अपार प्रेम तथा अमित भक्ति है, इसीलिए वे बड़े स्नेह भाव के साथ कह देते हैं कि मैं तुम्हें देखने नहीं आया हूँ। वे इतना तक कह देते हैं कि जब श्रीनिवास सर्वोत्तम, सर्वेश्वर तथा सर्वव्यापी है, तो उसे देखने के लिए इतनी दूर आने की आवश्यकता भी नहीं है। विश्व में हर चीज हर जगह मिलती है लेकिन तिरुमल ही एक ऐसी जगह है जहाँ समस्त तीर्थ, समस्त पुण्यधाम तथा सर्वतत्वात्मक भक्त इकट्ठे मिलते हैं। कवि कहते हैं कि मैं यहाँ इसलिए आया कि मैं इन सबसे एक साथ मिल सकूँ। वे अपना तर्क यूँ प्रस्तुत करते हैं - 'रक्षणार्थम् रमाकांतः रमते प्राकृतोयथा' - यानी कलियुग के भक्तों की रक्षा हेतु तुमने पद्मावती मैया से विवाह किया और यहाँ अवतार धारण किया। 'चूँकि तुम भक्तवत्सल हो, इसलिए मैं तेरा दर्शन प्राप्त करने आया हूँ।'

विजयदास की भक्त्यातिरेकता से प्रसन्न होकर, श्रीनिवास उन्हें दर्शन प्रदान करके, संतुष्ट कर देते हैं।

भगवान के आदेशानुसार, विजयदास ने तैंतालीस कीर्तन जिन्हें 'सुलाद' कहते हैं, ऐसी पदों की रचना की।

सुलादिदास नाम से प्रसिद्ध विजयदास जी ने अपने पदों के चरण अति दीर्घ बनाकर रची। इस कारण से वेंकटाचल का वर्णन तथा वेंकटेश्वर की महिमाओं की वर्णन प्रक्रिया, भक्तों के हृदयपटल में उस पर्वत तथा पर्वतेश्वर के रूप का अमिटछाप छोड़ देती है।

''स्वामि पुष्करणिस्नान ई महात्मन दर्शन
ई महियोळ गोम्मे ने मदल्लि माडिदवनु
योमा भूपाताळ दोळगेनिस्सीमनागि चरिसि निज
कामितार्थव बेडदे। कामिसि हरिय पाद
पामरनागदे नम्म विजय विठलन्न नामवने उंडु निज
धाम दल्लि सेरुवनु।।''

इस भू मंडल पर जन्म लेनेवाला भक्त अगर श्रद्धापूर्वक स्वामिपुष्करिणी में स्नान करता है, तो वह स्वर्ग, पृथ्वी तथा पाताल में स्वेच्छापूर्वक सब कुछ पाता है तथा अंततोगत्वा श्रीहरि के पादपद्मों में मोक्ष प्राप्त करता है।

''सुररु गंधर्वरु उरगयक्षसिद्ध।
गरुडकिंपुरुष किन्नररु गह्यकरु। सा।
ध्यरु तुंबरादि निकरवल्लि गल्लिगे।
वरतपसिगळागि गिरिय तप्पलल्ली
गरुडासन नम्म विजय विठलन्न
स्मरणे माडुत संचरिपुदु कंडे।।''

विजयदास यह कहते हैं कि मैंने इन पर्वतश्रेणियों की वृक्षों के समूहों में देव, गंधर्व, उरग, यक्ष, किन्नर, सिद्ध, गरुड, किंपुरुष, साधक, तुम्बुर आदि को तपस्वियों के भेष में देखा जो भगवदनुग्रह के कांक्षी बने हुए थे।

''शिलेये सालग्राम। होळलेसुदरुशन।
थळथळ सुवर्णामळले चक्रांकित।

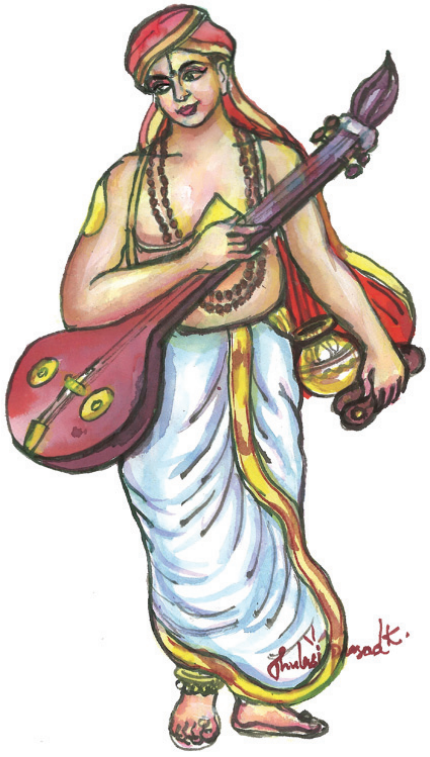

इळेयोळगिदे निश्चल वैकुंठनगर
सलेश्वेतद्वीप इदे पोळेवानंतासन
स्थळ वेंदु उत्तमरु तिळिदु मन्नि सुवरु
भलिने नव्वानम्म विजयविठ्ठलन्न
उलिसि भजिसुवरु जलजलर्भादिगळु।।''

विजयदास कहते हैं कि इस पर्वत के चट्टान, शालग्राम हैं, सुदर्शनचक्र हैं, यह धाम, भू पर विराजित साक्षात् वैकुंठ है। इस पर्वत को श्रेष्ठ भक्तों ने श्वेतद्वीप, अनंतफलप्रदाता के रूप में अनुभव किया। यहाँ के विजयविट्ठल रूपी श्री वेंकटेश्वर स्वामी की स्तुति ब्रह्म, रुद्र आदि बड़ी श्रद्धा के साथ करते हैं।

''वरगिरि यात्रे मनमुट्टि माडलु
वरवीव परनाम विजयविठ्ठल तिम्मा।।''

इस वरगिरि (वर प्रदान करनेवाला पर्वत) का संदर्शन जो भी करता है, उसे अनंत वर यहाँ के विजय विट्ठल से मिलता है।

क्रमशः

भीम का नाम बताना है, ये सब न बोलकर सिर्फ सात्यकि का नाम लेना क्या सूचित कर रहा है? अर्थात सात्यकि और दुर्योधन में एक अंतर है। इस युद्ध की तैयारी से पूर्व दुर्योधन और अर्जुन श्रीकृष्ण परमात्मा के पास गए थे। जाकर आगामी युद्ध में सहयोग करने की प्रार्थना की। अर्जुन परमात्मा को अपने पक्ष में कर लेता है। दुर्योधन श्रीकृष्ण परमात्मा की सारी यदु सेना को अपने पक्ष में मांग लेता है। श्रीकृष्ण के आज्ञानुसार यादव सैनिकों को दुर्योधन के पक्ष में रहकर युद्ध करना था। किंतु उनमें सात्यकि श्रीकृष्ण परमात्मा की बात न मानकर मैं अधर्म के पक्ष में नहीं रहूँगा। मैं पांडवों के पक्ष में आपके साथ ही रहूँगा कहकर शपथ लेता है। शपथ लेकर युद्ध में आता है। श्रीकृष्ण परमात्मा की सारी सेना कौरवों के पक्ष में थी। लेकिन सात्यकि अकेला पांडवों की ओर चला गया। इसे अकेले ही धर्म दीक्षा है क्या? राजा की आज्ञा का पालन नहीं करेगा? अकेले से क्या होगा? पहला सात्यकि का नाम दूसरा विराटश्च का नाम बता रहा है। विराट हमारे लिए बहुत पहचाना नाम है। वह विराट साधारण वीर दुर्योधन को न पहुँचाने वाली क्षति पहुँचाता है। उन्होंने अज्ञातवास में पांडव को आश्रय दिया था। कहीं और अज्ञातवास किए होते तो मैं कैसे भी पता लगा लेता। ऐसा अवसर मुझे प्राप्त न होने दिया इस विराट ने। वह विराट राजा ही था। यह अभिप्राय दुर्योधन का था। पांडवों ने स्वयं ही अपने सामर्थ्य से अज्ञातवास पूर्ण नहीं किया। विराट राजा नामक एक द्रोही ने उन पांडवों को आश्रय दिया था जिससे उनका अज्ञातवास पूर्ण हुआ। यदि मैं उस अज्ञातवास को भंग कर देता तब इन्हें और तीन साल वनवास करना पड़ता। युद्ध की बात ही नहीं आती। अतः यह युद्ध चाहने वाला विराट ही है। तीसरा नाम 'द्रुपदश्च' द्रुपद से द्रोण को वैर था, अर्थात द्रुपद से द्रोणाचार्य को वैर था। लेकिन द्रुपद से द्रोणाचार्य को द्रुपद से वैर नहीं था। अर्थात द्रुपद के मन में द्रोणाचार्य पर द्रोणाचार्य में द्रुपद के प्रति शत्रु भाव नहीं था। लेकिन द्रुपद, कैसे भी हो मेरा पुत्र उनका सिर काटेगा।

मुझे देखना है। इसी उद्देश्य से आया था। यह वहाँ सभी को पता था। वह सभी महावीर, महाराजे सहज रूप से ही प्रतिज्ञाएँ करते रहते हैं। बाहर बातें करते रहते हैं। किंतु भीतर क्या बातें चल रही है यह द्रोणाचार्य को पता है। 'द्रुपदः' द्रुपद यह कहता है एक और बार द्रुपद पुत्रः कह कर द्रुपद के पुत्र को दिखाते हुए तुम्हें मारने के लिए ही मैंने बेटे को जन्म दिया। ऐसा उसके दुस्वभाव को बाहर रखता है। वह दूसरे वीरों को नीचा दिखाते बातें करना, इतना ही न होकर और वीरों के नाम दुर्योधन आदि इस तरह उच्चरित करता है -

दृष्टकेतुश्चेकितानः काशिराजश्च वीरयावन
पुरजित कुन्तिभोजश्च शैभ्यश्च नरपुंगवः।।

दृष्टकेतन 'चेकितान' पुरूजित, कुंती भोजः दोनों वीर रिश्ते में पांडवों के मामा, शैब्यु शिव देश के राजा इनके नाम लेने का रहस्य दृष्टकेतन चेदि देश के राजा ''चेद्यः'' ऐसा इनका नाम है। यह दृष्टकेतन शिशुपाल का पुत्र है। यह शिशुपाल कौन हैं? महा कृष्ण द्वेषी, जीवन भर कृष्ण की बुराई करते रहते और अंत में कृष्ण के सुदर्शन चक्र को बलि हो जाने वाला है। उनका पुत्र दृष्टकेतन है। पिता की तरह कृष्ण परमात्मा और पांडवों पर इसके अपने मन में द्वेष नहीं भरा था। वह पांडवों के पक्ष में चला गया। अपनी बहन ''श्रुणुमत'' का विवाह नकुल के साथ करवाया। बंधुत्व के लिए धर्मियों से मुझे सहजीवन करना है। मेरे पिता ने गलती की तो मुझे भी गलती करने की आवश्यकता नहीं

है। इस तरह के लिए गए फैसलों के बारे में विशेष रूप से प्रस्तावित करता है। शिशुपाल से जन्मा यह दृष्टकेतन मेरे पक्ष में न आकर पांडवों के पक्ष में जाएगा? उस नकुल को अपनी बहन को कैसे सौंपेगा? ऐसा ही एक और नाम चेकितन महा योद्धा है। इनका जन्म युद्ध से विनोद के लिए हुआ था। इनके लिए युद्ध एक तपस्या की तरह है। यह अर्जुन का मित्र है और अर्जुन के पक्षपाती है। ऐसे चेकितन आगे चलकर काशीराज कहलाए। इस नाम के उच्चारण मात्र से ही सभी को महा पुण्य की प्राप्ति होती है। ऐसे काशी क्षेत्र में रहने वाले काशीराज चेकितन है। इस ''काशिराजश्च वीरयावन'' पराक्रम पीढ़ी जन्म लेती है। कुछ लोग उनके वंश में जन्म लेते हैं। किंतु एक ही वंश में पीढ़ियों के बाद पीढ़ियाँ सदैव वीर ही जन्म लेते हैं ऐसे कुछ वंश है।

क्रमशः

(गतांक से)

श्रीवैष्णव दिव्यदेश-108

- श्रीमती विजया कमलकिशोर तापड़िया
मोबाइल - 9482365339

1) श्रीरंगम (तिरु अरंगम)

भू मंडल पर स्थित 106 श्रीवैष्णव दिव्यदेशों में यह बहुत प्राचीन एवं स्वयं व्यक्त क्षेत्रों में प्रधान होने से **पेरिय कोविल (बृहत मंदिर)** के नाम से विख्यात है। इसे तिरुवरंग, भूलोक वैकुण्ठ भी कहते हैं। श्रीरंगम मंदिर में विराजमान भगवान श्रीरंगनाथ की आराधना-पूजा इक्ष्वाकु वंश के भगवान श्रीरामचन्द्र और उनके पूर्वजों ने की है, इसका बडा महत्त्व है। श्रीरंगनाथ भगवान इक्ष्वाकु कुलधन के दिव्य नाम से भी सुशोभित हैं। श्रीरामचन्द्रजी ने अपने राज्याभिषेक के समय श्री विभीषण को श्रीरंगनाथ भगवान की श्रीविग्रह भेंट किया था। श्री विभीषण श्रीलंका जाते समय भगवान श्रीरंगनाथ ने श्रीरंगम में ही विराजमान रहने का संकल्प कर लिया था। श्रीरंगम मंदिर उभय कावेरी, वड तिरुकावेरी के मध्य श्रीरंगम रेल स्टेशन से लगभग एक कि.मी. पर स्थित हैं।

आचार्य श्री रामानुज स्वामीजी ने हजार वर्ष पूर्व स्थानीय भक्तों से लेकर पांचरात्र आगम पद्धति के अनुसार, आराधना-पूजा क्रम, उत्सव आदि की व्यवस्था की थी। जिसका आज भी पूर्ण रूप से निर्वाह किया जा रहा है। मूल श्रीविग्रह श्रीरंगनाथ, पेरिय पेरुमाल (बृहद भगवान) नाम से जाने जाते हैं।

आण्डाल सहित 11 आल्वारों ने यहाँ मंगलाशासन किया है। मंदिर का 13 तलवाला गोपुर 230 फिट ऊँचा है। चोटी पर 13 कलश प्रतिष्ठित है। इस मंदिर के सात प्राकार हैं। मंदिर में श्रीरंगनाथ भगवान एवं श्रीरंगनायिकी देवीजी सन्निधि प्रधान है। इसके बाद श्री सुदर्शन चक्रराज की सन्निधि का महत्त्व है। इन तीन सन्निधियों के अलावा और 49 सन्निधियाँ हैं। इन में मुख्य रूप से 12 आल्वार, श्री रामानुजाचार्य स्वामीजी, श्री नाथमुनि, श्री यामुनाचार्य स्वामीजी, श्री वेदान्तदेशिक स्वामीजी, श्री वरवरमुनि स्वामीजी की सन्निधियाँ प्रमुख है। मंदिर में कुल 21 गोपुर एवं विमान जिनमें सात प्रमुख गोपुर हैं। मूल स्थान गर्भगृह के ऊपर स्वर्ण रचित विमान के दक्षिण की ओर परवासुदेव की स्वर्ण-निर्मित मूर्ति है।

श्रीरंगनाथ भगवान के दर्शन :

सप्त प्राकार मध्ये सरसिज मुकुलोद्भासमाने विमाने,
कावेरी मध्यदेशे मृदुतर फणिराड भोग पर्यंक भोगे।
निद्रामुद्राभिरामं कोटिनिकट शिरः पार्श्वविन्यस्त हस्तं
पद्माधारी कराभ्यां परिचित चरणं रंगराजं भजेऽहम्।।

श्री परवासुदेव की स्वर्ण मूर्ति

श्रीरंगम मंदिर के सात प्राकार हैं। चार चहारदिवारियों के मध्य में, कमल मुकुल सहश दीप्तिमान विमान में उभय कावेरी मध्य क्षेत्र में अत्यन्त मृदु एवं कोमल आदिशेष नाग के शरीर रूपी पर्यंक पर योग-निद्रा (शयन मुद्रा) में अति शोभायमान एवं हस्त कटी भाग पर, दूसरा हस्त सिर के पार्श्व में रखे जिनके परिचित चरणों की महालक्ष्मी एवं भूदेवी अपने करकमलों द्वारा सेवा कर रही हैं। ऐसे श्रीरंगनाथ भगवान की वन्दना करता हूँ।

तोण्डरडिपोडि आल्वार ने यहाँ पुष्प कैंकर्य किया है। श्री परकाल सूरी द्वारा जीर्णोद्धार किया गया। आचार्य श्री रामानुज स्वामी, देशिकन, मनवाल महामुनि, पिल्लै लोकाचार्य आदि कई आचार्य पुरुष यहाँ विराजकर विशिष्टाद्वैत सिद्धान्त को आगे बढ़ाने-फैलाने की महान सेवा की।

मंदिर में उत्सव वर्ष भर में कई साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक, वार्षिक मनाये जाते हैं। जिनमें दो ब्रह्मोत्सव, पवित्रोत्सव, वसन्तोत्सव, धनुर्मास उत्सव, अध्ययन उत्सव आदि बडे पैमाने पर वैभव के साथ मनाये जाते हैं। अध्ययन उत्सव कुल 20 दिन मनाया जाता है। जब 4000 प्रबन्ध पदों का पाठ अरियर सेवा सहित बड़े वैभवपूर्ण से मनाया जाता है। वैकुण्ठ एकादशी के दिन प्रातः ''वैकुण्ठ द्वार'' का उद्घाटन होता है।

2) उरैयूर (तिरुक्कोलि) मिकेलापुरी

यह दिव्यदेश **नाच्चियार कोइल** के नाम से प्रसिद्ध है। यह श्रीरंगम मंदिर से लगभग 5 कि.मी. की दूरी पर तिरुचिरापल्ली शहर में है। जो तिरुच्चि जंक्शन से लगभग 4 कि.मी. की दूरी पर है।

मूल श्रीविग्रह - अलहिय मनवाल पेरुमाल (रम्य जामाता)। हाथ में प्रयोग चक्र-उत्तराभिमुख खडे दर्शन देते हैं।

देवीजी भगवान के बगल में ही कमलवल्ली नाच्चियार आसीनस्थ उत्तराभिमुख दर्शन देती हैं। दूसरे नाम वरलक्ष्मी, उरैयूरवल्लि।

तीर्थ - कल्याण तीर्थ, सूर्य पुष्करिणी, कुडमुरुट्टी नदी।

विमान - कल्याण विमानम।

चोल राजा की पुत्री कमलवल्ली नाच्चियार ने भगवान श्रीरंगनाथ से प्रगाढ प्रेम के कारण व्रत का अनुष्ठान किया कि श्रीरंगनाथ उसका पति बने। उसकी भक्ति से प्रसन्न होकर श्रीरंगनाथ भगवान ने उससे विवाह कर लिया। इसलिए उनका नाम अलहिय मनवालन (रम्य जामाता) भी

है। यह तिरुप्पणाल्वार का अवतार स्थल भी है। इस मंदिर में उनकी सन्निधि है। प्रतिवर्ष फाल्गुनी उत्तर के दिन श्रीरंगनाथ भगवान यहाँ पधारते हैं। उनका कमलवल्ली से परम्परागत रीति से कल्याणोत्सव सम्पन्न होता हैं। दो आल्वारों ने इनका मंगलाशासन किया है।

3) तिरुक्करंबनूर (उत्तमर कोइल) -

श्रीरंगम से लग-भग 4 कि.मी. दूरी पर है। स्थानीय बस आदि की सभी सुविधाएँ हैं।

मूल श्रीविग्रह - पुरुषोत्तमन (दक्षिणाभिमुख) भुजंग शयन।

माताजी - पूर्वा देवी, पूर्णवल्ली।

तीर्थ - कदम्ब तीर्थं।

विमान - उद्योग विमान।

वृक्ष - कदली वृक्ष।

कदम्ब मुनि, तिरुमंगैआल्वार, ब्रह्म, सरस्वती देवी आदि देवी-देवता की मूर्तियाँ भी है। शिवजी की सपरिवार भिक्षाटन

मूर्ति के रूप में उपस्थित है। इसलिए इस स्थल का एक नाम **भिक्षाण्डार कोइल** भी है।

क्रमशः

आयुर्वेद

सोंठ के फायदे

- डॉ.सुमा जोषि, मोबाइल - 9449515046

सोंठ क्या होती है?

सूखी अदरक के पाउडर को हिन्दी में सोंठ के रूप में भी जाना जाता है। यह ताजा अदरक को सुखाकर तैयार किया जाता है। यह एक बारीक सफेद पाउडर होता है। जिसमें से अच्छी सुगन्ध और तीखा स्वाद होता है। इसका भण्डारण भी आसान है। इसे चिकित्सा में प्रयोग किया जाता है। इसमें एंटी-ऑक्सिडेंट और एंटी-इन्फ्लोमेन्ट्री यौगिक जैसे बीटा-कैरोटीन, कैप्सैसिइन और कर्व्यूमिन आदि की भरपूर मात्रा पाई जाती है। सोंठ का अधिक सेवन करने से सीने में जलन, डायरिया, पेट सम्बन्धी रोग होने की आशंका बढ़ जाती है।

सोंठ का उत्पादन

सोंठ यानि सूखी अदरक के पाउडर का सबसे ज्यादा उत्पादन भारत, नाइजीरिया, चीन, कैरेबियन देशों के अलावा इण्डोनेशिया में होता है। अदरक का उत्पादन हमेशा गर्म जलवायु में किया जाता है।

सोंठ का उपयोग

सोंठ का उपयोग खाना बनाने में एक मसाले के रूप में होता है। प्राचीन काल से आयुर्वेदिक दवाओं में भी सोंठ का बहुतायत मात्रा में उपयोग किया जाता है।

घर पर सोंठ बनाने का तरीका

सोंठ को घर में बनाना बेहद आसान है। इसके लिये आपको ताजा अदरक चाहिए। अदरक को साफ करके छीलकर पतले टुकडों में काटकर एक प्लेट में धूप में सूखने के लिए अलग रख दें। अदरक को लगभग 150^{0} F पर ओवन सेट करें और करीब 2 घण्टे तक रहने दें। बीच-बीच में चेक करते रहें। पूरी तरह सूखने पर ठण्डा होने के लिए अलग रख दें। इसे बारीक पीसलें और अच्छे से डब्बे में रख दें।

आरोग्य में उपयोग

1 से 2 चुटकी सोंठ का शहद या गर्म पानी से करने पर शरीर की रोगवर्धक शक्ति मजबूत होती है। सोंठ को प्रतिदिन खाने से माईग्रेन से होनेवाली सरदर्द कम हो जाती है। खाने में सोंठ के चूर्ण को मिलाकर खाने से अल्जाइमर में लाभ मिलता है। बार-बार सर्दी या खांसी की दिक्कत होती है तो, गुनगुने पानी या दूध के साथ एक चुटकी सोंठ का प्रयोग रोजाना करने से लाभ होता है। अगर किसी व्यक्ति को एक्सरसाइज की वजह से कोहनी में दर्द है तो प्रतिदिन 2 ग्राम अदरक के सेवन से मांसपेशियों के दर्द को कम किया जा सकता है। वैसे तो अदरक तुरंत असर नहीं दिखाता है, लेकिन इससे मांसपेशियों में दर्द में धीरे-धीरे प्रभाव दिख सकता है।

मासिक धर्म के दौरान रोजाना एक ग्राम अदरक के पाउडर के सेवन से मासिक धर्म के दर्द से राहत मिल सकती है। हाई कोलेस्ट्रॉलवाले व्यक्तियों को रोजाना 3 ग्राम अदरक का सेवन करना चाहिए। इससे इसमें राहत मिलती है। गठिया में इसके पाउडर को 2-3 चम्मच पानी में डालें और उसे उबाल लें। जोडों में सूजन का इलाज करने के लिए इस पानी का सेवन करें। दर्द से राहत पाने के लिए घुटने पर, इसका पेस्ट भी लगा सकते हैं।

गर्भवती महिलाओं में मार्निंग सिकनेस और मंतली एक बहुत ही आम समस्या है। ऐसी अवस्था में 1-2 चिटकी सोंठ का पाउडर+100 एम.एल. पानी डालकर उबालें। जब 50 एम.एल. बच जाये तो पीने के लिए दे सकते हैं। दिन में एक बार दें। अदरक पाउडर में सूजन को कम करनेवाले और एंटी-जीवणु गुण होते हैं। जिससे मुँह से पैदा करने वाले बैक्टीरिया को मारने में मदद मिलती है। चिकनी पेस्ट बनने के लिए दूध पाउडर और सूखे अदरक पाउडर को मिलाएँ। चेहरे और गर्दन पर 15-20 मिनट के लिए लगाकर छोड दें। धोने के बाद चेहरे पर माइश्चराइजर का उपयोग करें। सप्ताह में एक बार इसे प्रयोग करें। यह मास्क त्वचा को फिर से जीवन्त करेगा।

उच्चरक्तशर्करा (Diabetes) की स्थिति में हर सुबह खाली पेट 2 ग्राम अदरक पाउडर को नमक के साथ पानी या बिना पानी के सेवन करें। नियमित प्रयोग से असर दिखाई देना शुरू हो जायेगा। अगर किसी व्यक्ति के शरीर में गैस बनती हैं तो उसे हल्के गुनगुने पानी के साथ सोंठ का पाउडर लेना चाहिए। दस्त या पेट में मरोड जैसी परेशानी के लिए भी अगर आप सोंठ के पाउडर को गुनगुने पानी के साथ लेंगे तो इससे आपकी परेशानी जल्द ही दूर हो जाएगी। भूख न लगने की समस्या हो तो सोंठ और सेंधा नमक को मिलाकर उसका सेवन करना चाहिए। इससे भूख लगने की क्षमता में इजाफा होता है। जोडों के दर्द में सूखी अदरक (सोंठ) को जायफल के साथ डालकर पीसलें। इसे तिल के तेल में डाल दें। उसमें भीगी हुई पट्टी जोडों पर लगाने से आराम मिलता है। इसके अलावा उबले हुए पानी के साथ शहद और अदरक पाउडर को पीने से गठिया में लाभ होता है।

सोंठ, हिंग और काला नमक मिलाकर लेने से गैस की समस्या में लाभ होता है। गरम पानी के साथ सोंठ का सेवन मोटापे को कम करने में सहायक है। यह पसीने को निकालने में सहायक है। जिससे शरीर का तापमान कम हो सकता है और शरीर के विषैले पदार्थों को बाहर निकालने में मदद करता है। जिससे बुखार में भी आराम मिलता है। शहद के साथ इसे खाने से बुखार कम होता है। पेट दर्द, कब्ज और अपच जैसी समस्याओं में इसे पीसकर हींग और सेंधा नमक के साथ लेने से आराम मिलता है। इसके अलावा इसे पानी के साथ उबालकर बार-बार पीने से डायरिया में काफी लाभ होता है। सोंठ को दूध में उबालकर, ठंडा करके पीने से हिचकी आना बन्द हो जाती है। लकवे के प्रभाव को कम करने के लिए सोंठ, जिगरी और गर्म मसूर की दाल को मिलाकर खाने से फायदा होता है।

कब न करें सोंठ का सेवन?

यदि इंसान के वो शरीर में बहुत अधिक जलन हो, पेशाब में जलन हो रही हो या शरीर पर घाव हों तो ऐसे में सोंठ का सेवन नहीं करना चाहिए। गर्मी के दिनों में सोंठ का सेवन न करें, चूंकि सोंठ की तासीर गर्म होती है। ये नुकसान पहुँचा सकता है। अगर किसी इन्सान को पित्त बढ़ने की वजह से बुखार हो रहा है, तो ऐसे में सोंठ का सेवन न करें। मेमोरियल स्लोअन केटरिंग कैंसर केन्द्र की रिपोर्ट है कि अदरक में रक्त को पतला करनेवाले गुण होते हैं। इसलिए यदि आपको ब्लीडिंग डिसऑर्डर है तो आपको अदरक का उपयोग नहीं करना चाहिए। अदरक का उपयोग न करें यदि आप गॉल्स्टोन (पित्ताशय की पथरी) से पीडित हैं। इसमें रक्त शर्करा को कम करनेवाले गुण पाये जाते हैं। इसलिए उस समय अदरक का उपयोग या इंसुलिन या रक्त शर्करा को कम करनेवाली अन्य दवा का सेवन करना, हाइपोग्लाइसीमिया का कारण हो सकता है।

सोंठ के नुकसान

इसका सेवन दिन में 5 ग्राम से भी कम होना चाहिए। इसके ज्यादा सेवन से पेट सम्बन्धी रोग यानि डायरिया होने का खतरा बढ़ जाता है। लम्बे समय के लिए प्रयोग करने से सीने में जलन और गैस की समस्या होने की संभावना बढ़ जाती है। अधिक सेवन से मुँह में जलन होने की समस्या भी हो सकती है। अधिक सेवन से मासिक धर्म में अधिक रक्तस्राव हो सकता है। सलाह सहित यह सामग्री केवल सामान्य जानकारी प्रदान करती है। हमेशा विशेषज्ञ से परामर्श करें।

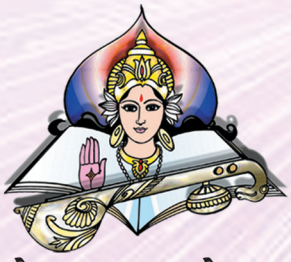

आइये, संस्कृत सीखेंगे..!!

लेखक - महामहोपाध्याय काशिकृष्णाचार्य
आयोजक - महामहोपाध्याय समुद्राल लक्ष्मण्या
हिन्दी में निर्वहण - डॉ.सी.आदिलक्ष्मी
मोबाइल - 9949872149

पञ्चदशः पाठः - पंद्रहवाँ पाठ

युष्मत् = आपके कारण	किन्तु= लेकिन	अस्मत्= हमारी
तर्हि; चेत् = तो अगर	गृहम् = घर	तूष्णीम् = चुप चाप
कुर्वन्तु= यदि तुम करो	कुरुत = कर	करवाम = हम करते हैं

प्रश्न : (अ)

1. तत्र किमर्थम् आसीः?
2. अहं तूष्णीम् आसम्।
3. तर्हि त्वं पाकं कुरु।
4. नोचेत् वयं करवाम।
5. चेत्किम्?
6. अस्मद् गृहे शाकानि न सन्ति।
7. ते कुत्र सन्ति वा खलु?
8. ते युष्मद् गृहे भोजनं कुर्वन्ति।
9. कुर्वन्ति चेत् कुर्वन्तु।
10. यूयं तूष्णीं स्त।

जवाब : (अ)

1. वहाँ क्यों थी?
2. मैं चुप चाप थी।
3. तो फिर तुम खाना बनाओ।
4. यदि नहीं तो हम करें।
5. लेकिन क्या?
6. हमारे घर में सब्जियाँ नहीं है।
7. वे कहाँ हैं?
8. वे आपके घर में खाना खा रहे हैं।
9. यदि करना है तो आप कर लीजिए।
10. आप बस जाएँगे।

प्रश्न : (आ)

1. आपके घर में कौन रहते हैं?
2. हमारे घर के सभी बच्चे नहा रहे हैं।
3. वे खाना पकाएँ।
4. मैंने खाना बनाया।
5. क्या आप वहाँ चुप चाप थे?
6. थोड़ा पकाएँ।
7. मैं पहले कई तरह से किया।
8. लेकिन वे हमारी घर में नहीं है।
9. आप अभी मत नहाए।
10. सबसे पहले हमें नहाना है।

जवाब : (आ)

1. युष्मद्गृहे के सन्ति?
2. अस्मद् गृहे सर्वे बालकाः स्नानं कुर्वन्ति।
3. ते पाकं कुर्वन्तु।
4. अहं पाकम् अकरवम्।
5. अहो! यूयं तत्र तूष्णीम् आस्त किम्?
6. किंचित पाकं कुरुत।
7. अहम् आदौ अनेकधा अकरवम्।
8. किन्तु ते अस्मद् गृहे न सन्ति।
9. यूयम् इदानीं स्नानं न कुरुत।
10. आदौ वयं स्नानं करवाम।

नीतिकथा

श्री महाविष्णु और गरुड के संवाद

- श्रीमती के प्रेमा रामनाथन
मोबाइल - 9443322202

एक बार भगवान विष्णु अपने गरुड वाहन पर बैठकर विश्व को देखने निकल पडे। जब वे ऐसे ही आकाश मार्ग पर विहार कर रहे थे तब गरुड से उन्होंने सवाल किया, ''हे गरुड! क्या तुम बता सकते हो, इस संसार में कितने प्रकार के लोग होते हैं?''

गरुड ने सोचा भगवान विष्णु तो महान ज्ञानी और सब कुछ जाननेवाले हैं। फिर भी मुझसे कुछ खेल रचने के लिए ऐसा पूछ रहे हैं। इतना सोच कर उसने भगवान को देखकर कहा, ''भगवान! इस दुनिया में तीन प्रकार के जन होते हैं।'' भगवान ने आश्चर्य प्रकट करते हुए कहा, ''गरुड, तुम क्या बता रहे हो? इस विशाल विश्व में तो इतने करोड लोग रहते हैं। क्या सिर्फ तीन प्रकार के जन ही होते हैं?''

यह सुनकर गरुड ने कहा, ''हे भगवान! आप तो सब कुछ जाननेवाले हैं। फिर भी मेरे अल्प ज्ञान के आधार पर कहना चाहता हूँ। इस संसार में प्रथम प्रकार के जन चिडिया और उसके बच्चे जैसे होते हैं। दूसरे प्रकार के जन गाय और बछडे के बराबर होते हैं। तीसरे प्रकार के जन तो पति-पत्नी जैसे अपना जीवन बिताते हैं।''

यह सुनकर भगवान विष्णु ने कहा, ''हे गरुड! तुम्हारा जवाब तो समझ में नहीं आता। इसलिए तुम उन तीन प्रकार के जनों के बारे में जरा विस्तार से बताओ।''

तब गरुड कहने लगा, ''हे भगवान! चिडिया अपने अंडे से पैदा होते बच्चों को समय पर खाना खिलाने के विचार से उसे ढूँढते हुए बाहर दूर-दूर तक निकलती है। मादा चिडिया के आने के पहले ही घोंसल में होते बच्चों में कुछ साँप के आहार बन जाते हैं। संध्या को वापस लौट आती मादा चिडिया अपने मृत बच्चों के बारे में कोई चिंता नहीं करती। बल्कि घोंसले में बचे अपने बच्चों को खाना खिलाती है। उन बच्चों को भी अपनी भूख के बारे में जितना दुख होता है उतना अपनी माँ के दुःख पर नहीं होता। वे कभी उस पर सोचते भी नहीं। जब बच्चे थोडा बढकर उडने का प्रयास करते हैं, तब उनमें से एक या दो नीचे गिरकर मर भी जाते हैं और कुछ ही जीवित रहते हैं। इस प्रकार कुछ लोग गरीबी से लडेंगे और मिलती कमाई से अपना जीवन बितायेंगे। उनको भगवान के बारे में कोई विचार नहीं होता। उनका जीवन तो चिडियों के बराबर मशीन की तरह रहेगा। वे सदा पैसे की चिंता में रहेंगे।''

गरुड ने आगे कहा ''गोशाला में गाय और बछडे को अलग बांध कर रखते हैं। गाय को देखकर बछडा और बछडे को देखकर गाय आवाज देती रहती हैं। बछडा जानता है कि गाय के पास जाकर दूध पीने से उसकी भूख मिट

जाएगी। लेकिन रस्सी से बंधित होने के कारण वह उसके निकट नहीं जा सकता।

दूसरे प्रकार के जन इस प्रकार के हैं। उनके मन में भगवान के प्रति विचार होते हैं। वे जानते हैं कि भगवान के पास जाएँगे तो हमारे सारे दु:ख मिट जाएँगे। जिस प्रकार रस्सी से बंधित होने के कारण गाय अपने बछडे के पास नहीं जा सकती और बछडा भी अपनी माँ के पास नहीं आ पाती। इस प्रकार दूसरे प्रकार के जन इच्छा रूपी रस्सी से बंधित होने के कारण भगवान को न पाकर दुखित होते हैं।''

गरुड ने फिर कहा ''तीसरे प्रकार के जन तो पति-पत्नी जैसे होते हैं। अपरिचित दोनों के बीच विवाह होता है। विवाह के बाद पत्नी अपने पति को आकर्षित करने के लिए और उस पर अपना प्रेम दिखाने के लिए साज-श्रृंगार कर लेती है और उसके पसंद का खाना बनाकर देती है। उसके ऐसे व्यवहार से दोनों के बीच में स्नेह का भाव विकसित होता है। यहाँ तक कि वे दोनों एक दूसरे को बिछुडने तैयार नहीं होते। इस प्रकार के लोग सदा भगवान के बारे में सोचते रहेंगे। प्रारंभ में उनकी परीक्षा करने वाले भगवान आखिर उनको अपने साथ मिला लेते हैं।

उसके बाद कोई भी शक्ति उनको अलग नहीं कर सकती। जब भगवान के प्रति सच्ची भक्ति बढती है तब उनको कोई बाँध नही सकता। उन्हें भगवान की कृपा अवश्य मिल जाती है। उनको भगवान की दया प्राप्ति से कोई रोक नहीं सकते।''

गरुड के ऐसे जवाब से भगवान विष्णु एकदम प्रसन्न हुए और उन्होंने उसकी बुद्धि कुशलता की बडी प्रशंसा की।

'क्विज'

- डॉ.एन.दिव्या

१) किस भगवान ने गंगा को अपने शिर पर धारण किया?

अ) राम आ) शंकर इ) कृष्ण ई) बालाजी

२) होली त्योहार के पहले दिन किसका दहन किया जाता है।

अ) होलिका आ) रावण इ) नरकासुर ई) बकासुर

३) अमृत मंथन में कौन सा पर्वत मथनी बना था?

अ) आरावली आ) मेरू इ) मंदर ई) विन्ध्या

४) बालाजी स्वामीजी से किस महंत ने पासे खेला था?

अ) सेवादास आ) प्रयागदास इ) धर्मदास ई) हथीरामबावाजी

५) महाभारत का वास्तविक नाम क्या है?

अ) जय संहिता आ) जय भारत इ) जय गोविंद ई) जय महाभारत

६) महाभारत में कीचक वध किस पर्व के अंतर्गत आता है?

अ) आदि पर्व आ) विराट पर्व इ) सभा पर्व ई) वन पर्व

७) जटायु के बडे भाई का नाम क्या था?

अ) संजय आ) सहदेव इ) सम्पाती ई) सात्विक

जवाब

१) आ २) अ ३) इ ४) ई ५) अ ६) आ ७) इ

चित्रकथा

मूक जीवों की मुक्ति

तेलुगु में - श्री डी.श्रीनिवास दीक्षितुलु
हिन्दी में - एन.प्रत्यूषा
चित्र - श्री के.तुलसीप्रसाद

प्राचीन काल में ऊर्जानाभ नामक एक शिल्पी ने ब्रह्म के शाप के कारण धरती पर मकडी के जैसा पैदा हुआ था। गजारण्य के बिल्व वृक्ष पर वह मकडी (कीडा) रहता था।

1

उस कीडे ने पेड के नीचे शिवलिंग को छाया देने केलिए मकडी का जाल बनाया!

2

दूसरे दिन पुजारी द्वारा रखा गया दीप को देख कर मकडी...

3

हाय रे यह दीप प्रज्वलित हो रहा है। जिससे भगवान को गरमी पहुँचेगी।

4

प्रज्वलित दीप का तेज को रोकने के लिए मकडी ने उस पर कूदते ही, शिवजी प्रत्यक्ष होकर...

5

तुम्हें मुक्ति प्रदान करता हूँ।

6

शिवजी के गले का साँप अपचार करने के कारण शाप वश धरती पर जन्म लिया।

7

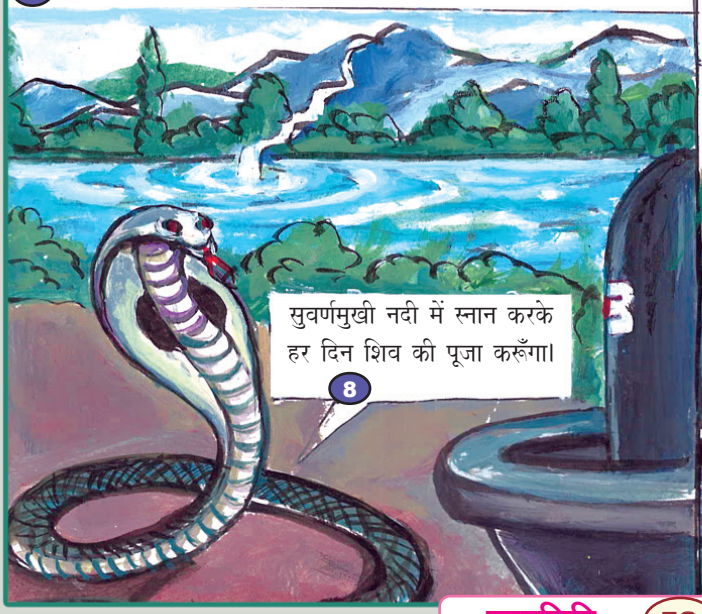

सुवर्णमुखी नदी में स्नान करके हर दिन शिव की पूजा करूँगा।

8

कुछ दिनों के बाद शिवकिंकर नामक हाथी गलती करने के कारण पार्वती देवी के शाप से बिल्व वन में पहुँच गया।

9

इस शिवलिंग की पूजा करके मुक्ति पाऊँगा।

10

सबसे पहले सर्प नदी में स्नान करके बिल्व पत्रों को लाकर शिवलिंग के ऊपर रख कर पूजा करने लगा। उसके बाद हाथी अपनी सूँड से पानी लाकर...
11

इस तरह हर दिन पूजा करते हुए मूक जानवर एक दूसरे के दुश्मन बन गये। सर्प ने सोचा।
13

सर्प को पूजा करते हुए देख कर हाथी ने सोचा। मुझ से पहले आकर यह सर्प ने शिव की पूजा किया। पहले इसका काम तमाम करना है।
15

दूसरे दिन हाथी अपनी सूँड से पानी भर कर लिंग का अभिषेक करते समय सर्प हाथी की सूँड में घुस गया। हाथी तकलीफ से अपनी सूँड को पत्थर पर डाल कर पीटने लगा।
16

सर्प हाथी के कुंभस्थल में पहुँच गया। हाथी दर्द के कारण अपनी सूँड को पत्थर पर पटकने लगा।
18

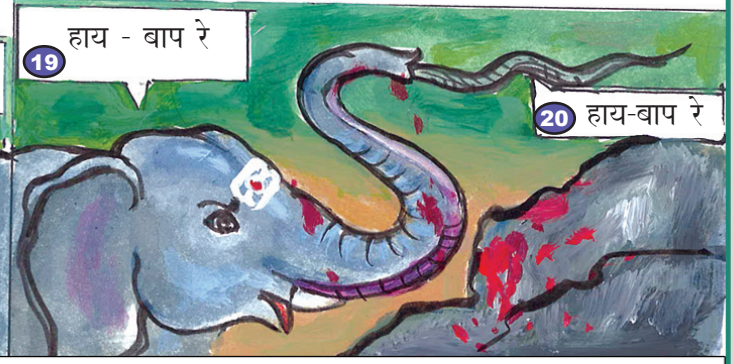

शिव की पूजा करने के लिए दोनों मूक जानवर आपस में झगड कर मर गये। शिव-पार्वती दोनों प्रत्यक्ष हुए।
21

तुम दोनों को मुक्ति प्रदान करता हूँ। तुम्हारे नाम से यह पुण्य क्षेत्र 'श्रीकालहस्ती' के नाम से प्रसिद्ध बनेगा।
22

इस चित्र को रंगों से अब भरें क्या?

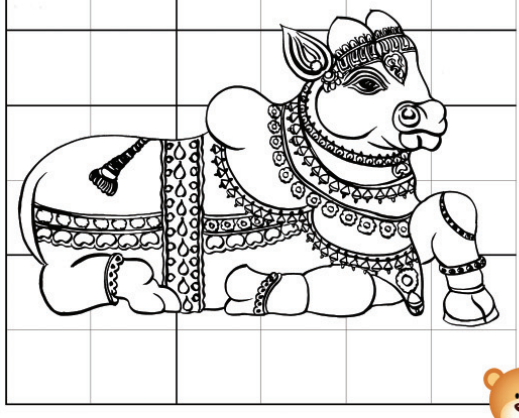

बगल में सूचित चित्र को नीचे के डिब्बों में खींचिये-

निम्न लिखित को मिलाएँ!

1) श्रीकालहस्ती	अ) महालक्ष्मी
2) काशी	आ) मीनाक्षी
3) कंची	इ) ज्ञानप्रसुनांबादेवी
4) मधुरै	ई) विशालाक्षी
5) कोल्हापुर	उ) कामाक्षी

1) इ 2) ई 3) उ 4) आ 5) अ

श्री लक्ष्मी गायत्री मंत्र

ॐ श्री महालक्ष्म्यै च
विद्महे विष्णु पत्न्यै च
धीमहि
तन्नो लक्ष्मी प्रचोदयात्॥

चित्र में अंतर खोजे!

1) आम के पत्ते
2) मंडप के लिए केले के पत्ते
3) मंडप के लिए फूलों का सजावट
4) देवी माँ के पीछे मेहराव
5) चटाई पर बैठने वाले पुजारी
6) फल बर्तन
7) सामने बैठने वाली महिला की साडी

Printed by Sri P. Ramaraju, M.A., and Published by Dr.K. Radha Ramana, M.A., M.Phil., Ph.D., on behalf of Tirumala Tirupati Devasthanams and Printed and Published at Tirumala Tirupati Devasthanams Press, K.T.Road, Tirupati-517 507. Editor : Dr.V.G. Chokkalingam, M.A., Ph.D.

तिरुपति
श्री कोदंडरामस्वामीजी का ब्रह्मोत्सव
2022 मार्च 30 से अप्रैल 07 तक

30-03-2022
बुधवार
दिन - ध्वजारोहण
रात - महाशेषवाहन

31-03-2022
गुरुवार
दिन - लघुशेषवाहन
रात - हंसवाहन

01-04-2022
शुक्रवार
दिन - सिंहवाहन
रात - मोतीवितानवाहन

02-04-2022
शनिवार
दिन - कल्पवृक्षवाहन
रात - सर्वभूपालवाहन

03-04-2022
रविवार
दिन - पालकी में आरूढ़
मोहिनी अवतारोत्सव
रात - गरुडवाहन

04-04-2022
सोमवार
दिन - हनुमन्तवाहन
सायं - वसंतोत्सव
रात - गजवाहन

05-04-2022
मंगलवार
दिन - सूर्यप्रभावाहन
रात - चंद्रप्रभावाहन

06-04-2022
बुधवार
दिन - रथ-यात्रा
रात - अश्ववाहन

07-04-2022
गुरुवार
दिन - चक्रस्नान
रात - ध्वजावरोहण

SAPTHAGIRI (HINDI) ILLUSTRATED MONTHLY Published by Tirumala Tirupati Devasthnams
Printing on 20-02-2022 & Posting at Tirupati RMS Regd. with the Registrar of Newspapers for India under RNI No.10742/1957. Postal Regd.No.TRP/152/2021-2023
"LICENCED TO POST WITHOUT PREPAYMENT No.PMGK/RNP/WPP-04(2)/2021-2023"
Posting on 5th of every month.

तरिगोंडा

श्री लक्ष्मीनरसिंहस्वामी जी का ब्रह्मोत्सव

दि. 10-03-2022 से दि. 18-03-2022 तक